ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

जनवरी, 2022

- हमारा संविधान
- जंगल में नया साल
- आई है छब्बीस जनवरी
- नए साल का बड़ा उत्सव
- मीठी कहानी गन्ने की

सहयोग राशि
₹ 20/ मात्र

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

जनवरी 2022

वर्ष : 2, अंक : 13

इस अंक की रचनाएं

स्पेशल स्टोरीज

हमारा संविधान 10
नए साल का बड़ा उत्सव 12
नए साल पर नया प्रण 16
देवेंद्र मेवाड़ी — मीठी कहानी गन्ने की 24
कार्टून 27
कछुआ 39

अन्य

सैर- सपाटा गौरवशाली कुम्भलगढ़ 44
कार्टून 27

बाल मंच

चित्र : प्रग्यांश पुरोहित, करिश्मा, रितिका वेदुला 50
कविता : काजल धारीवाल 51

कहानियां

अनिल जायसवाल — जंगल में नया साल 6
इंजी. आशा शर्मा — आफत बनी आइसक्रीम 14
डॉ. मोहम्मद अरशद खान — बाघ अब नहीं उदास 18
प्रभा पारीक — सबका आसमान 22
सिराज अहमद — फुफ्फो, अव्वा, भाई, अप्पी 23
सुधा जुगरान — सच्ची दोस्ती 30
डॉ. सुनीता — किस्सा चालाक बिल्ली का 32
डॉ. मोहम्मद साजिद खान — हुआ रसोई में हंगामा 34
डॉ.फकीर चंद शुक्ला — शेरू बदल गया 36
कल्पना मनोरमा — फूल वाली लड़की 41
रेनू मंडल — दादा जी का चश्मा 46
पवित्रा अग्रवाल — छोटा सा अविष्कारक लुइस ब्रेल 48

कविताएं

डॉ. रोहिताश्व कुमार अस्थाना — आ गया नव वर्ष 5
प्रकाश मनु — आई है छब्बीस जनवरी 9
डॉ. अलका अग्रवाल — कोहरे का कोट 20
शादाब आलम — यही दुआ है 21
गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल' — जाड़ा आया 28
अमित कुमार अम्बष्ट — मुझको सर्दी नहीं भाती है 29

नया साल पर प्रश्न वही

अब हम नए वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। सबको उम्मीद थी कि 2021 से पीछा छूटेगा और नया वर्ष नई उमंग के साथ नई खुशियां लाकर सबके उदास चेहरे पर मुसकान ला देगा।

पर जाते-जाते पुराने वर्ष ने नए वर्ष को पुराने जख्म सौगात में दे दिए। कोरोना की टीस पीछा छोड़ने को तैयार नहीं। यह नया रूप लेकर फिर से परेशान कर रहा है। लॉक-डाउन का राक्षस फिर सिर उठा रहा है। स्कूल कुछ दिनों के लिए बंद भी हो गए हैं।

पर कहते हैं न, लोग तब तक सुधर नहीं सकते, जब तक पानी सिर के ऊपर न आ जाए। बार-बार चेतावनी देने पर भी लोग लापरवाही करने और मास्क को मजाक समझने से बाज नहीं आ रहे हैं। फिर जब स्थितियां नियंत्रण से बाहर होंगी तो सब मिलकर सरकार को कोसेंगे।

नया साल हर बार लोगों में जोश लाता हैं। हम सब साल शुरु होने से पहले बड़े जोश में आकर नए साल के लिए कुछ प्रण लेते हैं। प्रण के बारे में हम सोचकर बहुत खुश होते हैं। तुम बच्चों के माता-पिता भी प्रसन्न होते हैं कि हमारा बच्चा कुछ नया करने वाला है।

पर होता क्या है? हम साल के दो-चार दिन बीतते-बीतते अपने प्रण से पीछे हटने के बहाने ढूढ़ने लगते हैं। भई, जब हम अपनी बात पर टिक ही नहीं सकते, क्यों प्रण लेते हैं?

मेरा मानना है कि प्रण लेकर खुद को एक झटके में बदलने की सोचने या नया गोल सेट करने से अच्छा है कि हम अपनी गलतियों को आत्मसात करके उनसे धीरे-धीरे दूर होने की कोशिश करें। यकीन मानो, इसमें तकलीफ कम होगी, हमारा मजाक कम उड़ेगा और शायद सफल होने की संभावना ज्यादा होगी।

तुम सबके के प्यार से फल-फूलकर हमारी डिजिटल पत्रिका पायस अब दूसरे वर्ष में प्रवेश कर गई है। तुम बच्चों से प्यार करने वाले नामी बाल साहित्यकारों ने खुशी-खुशी अपनी रचनाएं तुम्हारे लिए दी हैं। यकीन मानो, इतने बड़े-बड़े बाल साहित्यकार एक साथ एक ही पत्रिका में तुम्हें पायस के अलावा कहीं नहीं मिलेंगे।

नए साल में मेरा प्रण नहीं, मेरी कोशिश होगी कि तुम्हारा परिचय हिन्दी के बाल साहित्यकारों से करवाऊं। उनके जीवन के बारे में जानकर, उनके बारे में पढ़कर तुम बहुत कुछ सीख पाओगे।

प्रयास रहेगा कि नियमित रूप से विज्ञान पर कोई कालम दे सकूं। इसके अलावा तुम सब भी अपने मन की बात बताओ, जिसे मैं पायस में स्थान दे सकूं।

अंत में तुम बाल पाठकों के साथ अन्य पाठक तथा पायस के लिए लिखने, चित्र बनाने और अन्य किसी भी तरह से सहयोग देने वाले साथियों का दिल से शुक्रिया।

अनिल जायसवाल

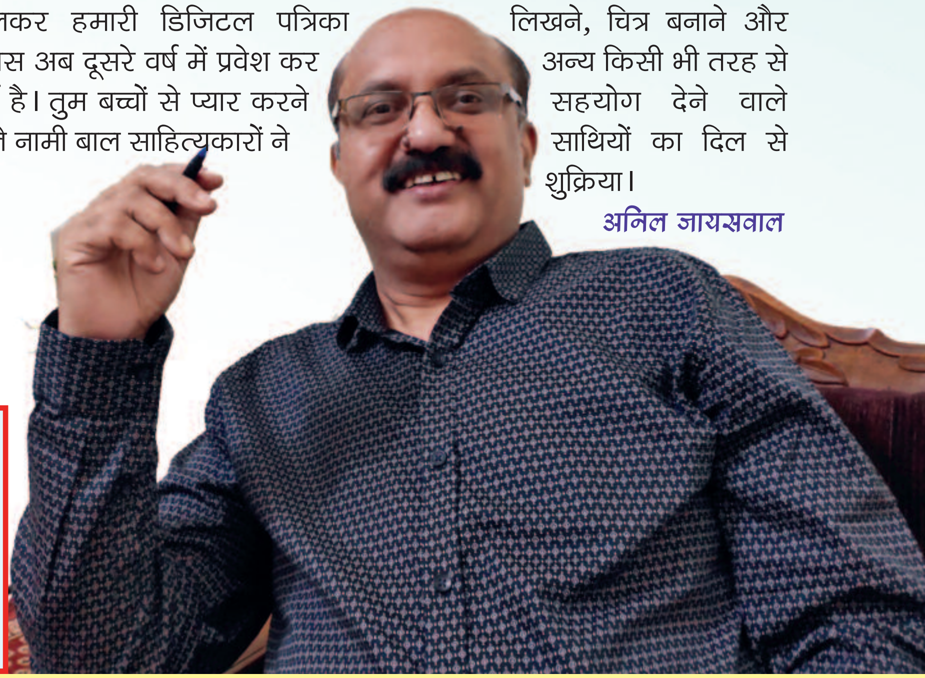

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो कृपया पढ़ने के बाद इसका 20 रुपए शुल्क मानकर सहयोग करें। धन्यवाद

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका पायस

संपादक : अनिल जायसवाल

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

◆ लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
◆ ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : PAYAS MAGAZINE
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। अब पायस दूसरे वर्ष में प्रवेश कर 13वां अंक लेकर सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. मोनिका अग्रवाल
2. रेनू मंडल

एक अपील

पत्रिका तैयार करने में धन की आवश्यकता होती है। तमाम खर्चों के बावजूद यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

भुगतान करना चाहें, तो

1 प्रति : 20 रुपए, एक वर्ष : 240 रुपए

एकमुश्त सहयोग : इच्छानुसार

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA

Anil Kumar Jaiswal

S/A no- 20155811729

Ifsc code SBIN0005943

Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533

ANIL JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल

9810556533, 7982014609

email : **payasmagazine@gmail.com**

आ गया नव वर्ष

आ गया नव वर्ष देखो।
हर्ष ही बस हर्ष देखो।।

वर्ष जो बीता पुराना।
दे गया संघर्ष देखो।।
हम सभी मिलकर रहेंगे।
यह विचार विमर्श देखो।।

हम पढ़ेंगे, हम लिखेंगे।
गढ़ेंगे उत्कर्ष देखो।।
चढ़ो नित उन्नति शिखर पर।
मत कभी अपकर्ष देखो।।

हारना मन से न भाई।
विजय चरमोत्कर्ष देखो।
एक नव इतिहास रच दो।
कह रहा नव वर्ष देखो।।

अपने लेखक को जानिए

डॉ. रोहिताश्व कुमार अस्थाना :
सम्प्रतिः अध्यापन से सेवानिवृत्त एवं स्वतंत्र लेखन, प्रकाशन : बाल साहित्य की 50 पुस्तकों का लेखन-संपादन, विशेष : हिंदी ग़ज़ल के प्रथम शोधकर्ता।
पुरस्कार : उ.प्र. हिंदी संस्थान से "बाल साहित्य भारती सम्मान"

जंगल में नया साल

अनिल जायसवाल

जंबूरा जंगल नए-नए बसे शहर बुकरमपुर से ज्यादा दूर नहीं था। यह जंगल अपने में अनोखा था क्योंकि यहां सारे जानवर और पक्षी मिल-जुलकर रहते थे।

राजा शेर सिंह जब बूढ़ा हुआ, तो उसका कोई सगे वाला शेर जंगल में न था। एक दिन उसने शिकार के लिए अपनी उम्र को भूलकर जंगली भैंसे पर आक्रमण कर दिया। भैंसा जवान और ताकतवर था, सो उसने उलटे शेरसिंह को पटखनी दे दी।

खिसियानी हंसी हंसते हुए हुए शेर सिंह ने सफाई दी, "मैं तो परख रहा था कि तुम अपनी रक्षा करने लायक हुए या नहीं।"

पर भैंसा इतना मूरख न था कि समझ न सकता। उसने जाकर जंगल वासियों को सारी बात बता दी। जंगल वासी सोच में डूब गए। आखिर जिराफ ने पहले मुंह खोला, "अगर हमारा राजा इतना कमजोर हो गया है, तो हमारी रक्षा कैसे करेगा?"

बात सबकी समझ में आ गई और अगले दिन ही सभा करके शेरसिंह को राजा के पद से हटा दिया गया। अब समस्या थी कि नया राजा कौन बने? तब मिट्ठू तोते का इस पद के लिए चुनाव हुआ। उसके पक्ष में बंटी बंदर ने तर्क रखा, "मिट्ठू शहर में लोगों के बीच रह चुका है। उनकी भाषा भी जानता है। इसके सगे-संबंधी अब भी शहर में रहते हैं। कोई बात होगी, तो हमें खबर लग जाएगी। फिर मिट्ठू दिन भर उड़ता रहता है। जंगल की सारी खबर यह रख सकता है। कोई खतरा होगा, तो यह हमें तुरंत बता सकता है और फिर हमारे ताकतवर भाई-बंधु उस खतरे का मुकाबला कर पाएंगे।"

उसका तर्क दमदार था। अतः सबने सिर से सिर मिलाकर डंके की चोट पर मिट्ठू को राजा घोषित कर दिया।

अब मिट्ठू ठहरा शहरवासी। उसे सूझी कि जानवरों को कुछ नए तौर-तरीके सिखाए जाएं। नया साल आ

रहा था। अतः इससे बढ़िया मौका न मिलने वाला था।

मिट्ठू ने घोषणा की, "मैं कुछ नया सीखकर आप लोगों के लिए कुछ नया करने की खातिर विदेश यात्रा पर जा रहा हूं। तब तक पुराने महाराज के सहयोग से हमारे महामंत्री बंटी बंदर राजकाज देखेंगे।"

सबसे हां बुलवाकर वह तो उड़ गए कुछ नया लाने को और जंगल वासी इस कुछ नए के इंतजार में लग गए।

एक हफ्ते बाद मिट्ठू महाराज जंगल लौटे। बड़े खुश थे। सभा का आयोजन हुआ, तो उन्होंने अपनी सफल यात्रा का विवरण दिया। फिर बोले, "शहर में नए साल पर धमाकेदार पार्टी होती है। सब अपने गम भुलाकर खूब नाचते-गाते हैं। पूरी रात पार्टी होती है।"

सुनकर जंगल के नौजवान और बच्चे बड़े खुश हुए। महाराज के पक्ष में जबरदस्त जयकारा लगा। फिर मिट्ठू जी ने नई बात कही, "नए साल पर रेजोल्यूशन अर्थात प्रण लेने का भी चलन है। हम सब नए साल पर कुछ अच्छा करने की शपथ लेंगे। शुरुआत मैं ही करता हूं। नए साल में मैं कभी झूठ नहीं बोलूंगा। बात करते समय मनुष्यों से सीखी अच्छी बातें करूंगा। अब आप लोग भी कोई प्रण लें।"

महाराज का हुक्म था। सबने प्रण तो ले लिए, पर घर लौटते वक्त सब यही सोच रहे थे कि क्या इसे निभा पाएंगे।

31 की रात जंगल में जबरदस्त पार्टी हुई। जो जानवर जिस विधा में पारंगत था, उस कला को सबके सामने रखा। महाराज की आज्ञा से जुगनुओं ने पूरे वन को टमटिमाती रोशनी से स्वप्नलोक में बदल दिया था। रात भर की पार्टी के बाद जब जानवर घर को चले, तो सब अपनी इस निर्णय पर गर्व कर रहे थे कि पुराने महाराज के बदले मिट्ठू को उन्होंने राजा बनाया।

अगले दिन जंगल में सब देर तक सोए रहे। कोई काम-धाम न हुआ। आखिर दोपहर को सब उठे।

अब तक महाराज मिट्ठू अपने प्रण के साथ फुल फार्म में आ चुके थे। तभी उसे भीखू भैंसा आता दिखाई दिया। मिट्ठू जी ने बड़े प्यार से कहा, "भीखू, नए साल पर तुमने क्या प्रण लिया है?"

"यही कि मैं सबके काम आऊंगा।" भीखू ने गर्व से उत्तर देते हुए पूछा, "महाराज, बताइए, मैं आपके क्या काम आऊं?"

"किसी से पूछकर उसके काम आओगे क्या? इसीलिए कहा जाता है कि पढ़ा-लिखा होना चाहिए। पर तुम्हें इससे क्या? सही कहते है मनुष्य, तुम्हारे लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।"

सुबह-सुबह ऐसी बात सुनकर भीखू का मुंह उतर गया। उसने अपने चारों तरफ देखा। सब मुंह दबाकर हंस रहे थे। पर सिप्पी सांप की हालत सबसे बुरी थी। वह तो हंसी के मारे रस्सी की तरह डाल से लिपटाता गया।

मिट्ठू को लगा, उसकी बातें बाकी जानवरों को अच्छी लग रही है। वह उत्साहित होकर सिप्पी सांप के पीछे पड़ गया, "भीखू पर क्यों हंसते हो? तुम्हें तो मनुष्य आस्तीन का सांप कहते हैं?"

"क्या मतलब?" सिप्पी की हंसी पर ब्रेक लग गया।

"मतलब कि जो अपनों को विश्वास में लेकर उसे धोखा दे दे, वह। तुम्हारा तो काम ही यह है। चिड़ियों को अंडे चट कर जाना और अभी अपने दोस्त भीखू पर ऐसे हंसना। मैं तो अपने प्रण से मजबूर हूं, पर तुम?"

माहौल कुछ खराब होने लगा था। उसे संभालने के लिए बंटी बंदर सबको हंसाने के लिए इस पेड़ से उस पेड़ तक गुलाटियां खाने लगा। मिट्ठू उसे देखकर पूछा, "क्या कर

रहे हो?"

"देखो, मैं स्पाइडरमैन और सुपर मैन हो गया हूं।"

"नकल करने में तुम्हारा जवाब नहीं, इसीलिए तो नकल करने वाले नकलची बंदर कहलाते हैं।" कहकर मिट्ठू फिर से हंसा, पर इस बार किसी ने उसका साथ न दिया। अपमान का दंश सबके चेहरे पर दिख रहा था।

गब्दू गधा को यह सब बुरा लग रहा था। उसने बाकी जानवरों से बात की और आगे आकर बोला, "मिट्ठू, नए साल के प्रण के नाम पर दूसरों का मजाक उड़ाना ठीक नहीं।"

"अच्छा, तो तुम सबके वकील बनकर आए हो। अपने राजा से ऐसे बात करते हो? जानते हो, मनुष्य तुम्हारे लिए कहते हैं, समय आने पर गधे को भी बाप बना लो। जैसे सबने अभी मुझ तक अपनी बात पहुंचने के लिए तुम्हें अपना बाप बना लिया है।" मिट्ठू घमंड से बोला।

कोई कुछ कहता, उससे पहले मिट्ठू को लगा, जैसे सारी धरती हिल गई। उसने पंख फड़फड़ाने चाहें, तो हिल भी न सका। उसके पंख तो मगरू मगरमच्छ के पैरों तले दबे थे, जिसे बंटी बुलाकर लाया था।

"अपने राजा से बेअदबी करते हो।" मिट्ठू ने चिल्लाकर बोलना चाहा पर आवाज निकल न पाई।

"मिट्ठू। मैं भी शहर में रह चुका हूं। एक दो मुहावरे मैं भी जानता हूं, जो शायद तुम्हें याद नहीं।" बंटी ने शांति से कहा। मिट्ठू यानी अपने राजा को मुसीबत में देखकर किसी जानवर के चेहरे पर शिकन न थी।

"कौन सा मुहावरा?" मिट्ठू ने मरी आवाज में पूछा।

"यही कि जल में रहकर मगरमच्छ से बैर नहीं करते।"

"क्या मतलब?"

"तुम्हें हमने अपना राजा बनाया, पर तुम तो सच बोलने के नाम पर सबकी बेइज्जती करने लगे। सच बोलने के लिए किसी का दिल दुखाना अच्छी बात नहीं। सचमुच, एकाध गुण देखकर नहीं, किसी के गुणों के साथ उसकी व्यवहारिकता और समझदारी को ध्यान में रखकर ही राजा चुनना चाहिए।

"बिल्कुल ठीक। यह राजा बनने लायक नहीं। इसने हमारा साल का पहला दिन ही खराब कर दिया। इससे अच्छे तो पिछले महाराज थे। चलो, उन्हें फिर से राजा बनाते हैं। क्यों साथियो?" बंटी ने कहा।

सब मान गए, पर सारा तमाशा देख रहे शेर सिंह ने सत्ता संभालने से इनकार कर दिया।

वह मुसकराकर बोले, "मैं सचमुच बूढ़ा हो गया हूं। मुझे फिर राजा बनाओगे तो यह तो लौटकर बुद्धू घर को आए वाली बात हो जाएगी। इससे अच्छा होगा, अब राजा की परंपरा खत्म कर मनुष्यों की तरह लोकतंत्र इस जंगल में लाते हैं। कुछ चुने हुए प्रतिनिधि इस जंगल की देखभाल करें।"

फिर शेरसिंह ने मगरू मगरमच्छ से विनती की, "आज साल का पहला दिन है। माफी से इसकी शुरुआत करते हैं। छोड़ दो मिट्ठू को।"

मिट्ठू लुटा-पिटा सा जाने लगा, तो शेर सिंह ने हंसते हुए बंटी से पूछा, "आखिर मिट्ठू के ऐसे व्यवहार पर भी तो मनुष्यों ने कोई मुहावरा बनाया होगा?"

"है ना। इसने मनुष्यों से बातें सीखीं तो सही, पर सही समय पर सही बात कहना न सीख पाया। ऐसे ही लोगों को कहा जाता है, रटंतु तोता।"

सुनकर शर्मिंदा होकर मिट्ठू वहां से उड़ गया, जब तक वह दिखाई देता रहा, जानवरों के ठहाकों की आवाज वातावरण में गूंजती रही। ❀

आई है छब्बीस जनवरी

नया जोश बन करके फिर से
आई है छब्बीस जनवरी,
घर-घर फहरे आज तिरंगे,
छाई है छब्बीस जनवरी।

याद करो वीरों की अनमिट,
वह कुरबानी याद करो तुम,
गूँज पुराने इतिहासों की
लाई है छब्बीस जनवरी।

टीस गुलामी की थी मन में
कैसा तूफाँ गरज उठा था,
यही बताने, हमको-तुमको
आई है छब्बीस जनवरी।

फिर कोई दुश्मन आ करके
नहीं बिछाए अपना जाल,
होशियार तुम रहना भाई
आई है छब्बीस जनवरी।

भूल न जाना जिम्मेदारी
देश पुकार रहा है फिर से,
एक नया संकल्प साथ में
लाई है छब्बीस जनवरी।

जनता का शासन होगा अब
जनता की मर्जी से भाई,
सीधी-सच्ची राह बताने
आई है छब्बीस जनवरी।

दूर गरीबी को करना है
होगी तब सच्ची खुशहाली,
यह संदेश सुनाने फिर से
आई है छब्बीस जनवरी।

छोटा-बड़ा नहीं है कोई
सब हैं भाई एक समान,
लोकतंत्र का अर्थ बताने
आई है छब्बीस जनवरी।

नई-नई मन की आशाएँ
नए-नए सपनों की सूरत,
उम्मीदें झिलमिल, झिलमिल सी-
लाई है छब्बीस जनवरी।

नया जोश बन करके फिर से
आई है छब्बीस जनवरी,
घर-घर फहरे आज तिरंगे,
छाई है छब्बीस जनवरी।

अपने लेखक को जानिए

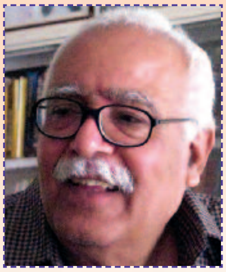

प्रकाश मनु : सुप्रसिद्ध साहित्यकार, संपादक और बच्चों के प्रिय लेखक। लगभग ढाई दशकों तक बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका 'नंदन' के संपादन से जुड़े रहे। बाल साहित्य की सौ से अधिक पुस्तकें। बाल कविता का इतिहास भी लिखा। प्रसिद्ध साहित्यकारों के संस्मरण, आत्मकथा तथा बाल साहित्य से जुड़ी कुछ बड़ी योजनाओं पर काम कर रहे हैं।

हमारा संविधान

संविधान किसी भी देश का सबसे बड़ा कानून होता है। कोई भी देश तभी ठीक से तरक्की कर सकता है, अपने लोगों की देखभाल कर सकता है, जब वह अपने बनाए हुए संविधान के अनुसार ही चले।

इस संविधान में देश को चलाने के लिए हर तरह के नियम-कायदे लिखे जाते हैं, जिन पर आने वाली सरकारें निर्भर होती हैं और उसी के अनुसार देश को चलाकर आगे बढ़ाती हैं

संविधान आमतौर पर उन देशों में ही होता है, जहां लोगों का शासन अर्थात गणतंत्र होता है, क्योंकि राजतंत्र में राजा का आदेश ही संविधान होता है। यही हाल उन देशों में भी है, जहां सैनिक शासन या किसी की अपनी सत्ता होती हैं। अपनी सत्ता से अर्थ तानाशाही है।

जब भारत आजाद नहीं हुआ था तभी सन 1928 में लखनऊ में भारत की सभी पार्टियों का एक सम्मेलन हुआ था जिसमें आजाद भारत को चलाने के लिए एक संविधान बनाने की बात हुई, जिसे नेहरू रिपोर्ट के नाम से जाना जाता है। उस समय भारत के अधिकांश राज्य ब्रिटिश कानून के अंतर्गत चलते थे।

6 दिसंबर 1946 को संविधान सभा का गठन किया गया और 9 दिसंबर 1946 को इसकी पहली मीटिंग में आचार्य जे.बी कृपलानी इसके कार्यवाहक अध्यक्ष बने। उसके 2 दिन बाद 11 दिसंबर को संविधान सभा ने डॉ. राजेंद्र प्रसाद को अपना अध्यक्ष चुनाव चुना। आरंभ में इस सभा के कुल 3389 सदस्य थे परंतु भारत के विभाजन के बाद केवल 299 सदस्य रह गए। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भविष्य के संविधान की रूपरेखा पर अपना एक प्रेजेंटेशन दिया। माना जाता है कि नेहरू की बात को संविधान बनाते समय काफी ध्यान में रखा गया।

भारत की आजादी से पहले ही 22 जुलाई 1947 को भारत के लिए राष्ट्रीय झंडे का चुनाव किया गया। उसके बाद 29 अगस्त 1947 को डॉक्टर भीमराव अंबेडकर को संविधान सभा का चेयरमैन चुना गया और उनके ही नेतृत्व में नए संविधान की रचना हुई। इसीलिए डॉक्टर अंबेडकर को भारतीय संविधान का निर्माता कहा जाता है।

संविधान बनाने वाली समिति ने पूरी दुनिया के संविधानों को बारीकी से पढ़ा और फिर अपना संविधान तैयार किया। इस समिति ने 26 नवंबर 1949 यानी ठीक 2 साल, 11 महीने और 18 दिनों का समय लिया और संविधान तैयार करके डॉक्टर बी. आर. अंबेडकर ने लिखित संविधान संविधान सभा के अपने अध्यक्ष डॉ राजेंद्र प्रसाद को सौंपा।

निर्णय लिया गया कि 26 जनवरी 1950 से यह संविधान लागू होगा इसीलिए हम हर वर्ष 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं। चूंकि 26 नवंबर को संविधान को स्वीकृत किया गया था, इसलिए इस दिन को अब भारत में संविधान दिवस के रूप में मनाया जाने लगा है।

सबसे खास बात ये है कि इस पूरे संविधान को न तो टाईप कराया गया था और न ही इसका कोई प्रिंट है। इसे हाथों से लिखा गया है, जिसे

आज हम कैलिग्राफी कहते हैं। हमारे संविधान को बिहारी नारायण रायजादा ने लिखा था। उनका पेशा ही सुलेख यानी हस्तलिपि का था। हर पेज की सजावट और चित्र बनाने का काम आचार्य नंदलाल बोस ने किया था। संविधान की मूल प्रति अब तक भारत के संसद में स्थित लाइब्रेरी में सुरक्षित रखी है?

हमारे संविधान की खास बातें

हमारा संविधान दुनिया का सबसे बड़ा लिखित संविधान है।

हमारे संविधान को तैयार करने में कुल 2 वर्ष 11 महीने और 18 दिन का समय लगा था।

जब यह संविधान तैयार हुआ था तो इसमें 22 भागों में विभक्त 395 अनुच्छेद थे और उसकी केवल 8 अनुसूचियां थी। परंतु वर्तमान समय में यह 25 भागों में विभाजित है। अनुच्छेद अभी 395 हैं लेकिन 12 अनुसूचियां हैं।

संविधान के अनुसार भारत की केंद्रीय कार्यपालिका के प्रमुख राष्ट्रपति माने जाते हैं।

भले ही राष्ट्रपति भारत के प्रथम नागरिक हैं, परंतु देश चलाने की जिम्मेदारी मंत्री परिषद की होती है जिसके प्रमुख प्रधानमंत्री होते हैं ।

सभी शक्तियां मुख्य रूप से मंत्रिपरिषद के पास है और राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद की सलाह के अनुसार ही अपने कार्य करते हैं।

भारत के राज्यों को भी भारतीय संविधान के अनुसार ही चलना होता है और वह अपना अलग संविधान नहीं बना सकते हैं।

राज्य और केंद्र की शक्तियां विभाजित हैं और भारतीय संविधान के अनुसार कार्य किया जाता है। ❁

भारत का संविधान

हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण
प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य
के लिये तथा उस के समस्त नागरिकों को:
सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार,अभिव्यक्ति,विश्वास धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिये,
तथा उन सब में
व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की
एकता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता
बढ़ाने के लिये
दृढ संकल्प हो कर अपनी इस संविधान सभा में
आज तारीख २६ नवम्बर १९४९ ई० (मिति मार्गशीर्ष
शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छः विक्रमी) को
एतद्द्वारा इस संविधान को अङ्गीकृत अधि-
नियमित और आत्मार्पित करते हैं।

नए साल का बड़ा उत्सव

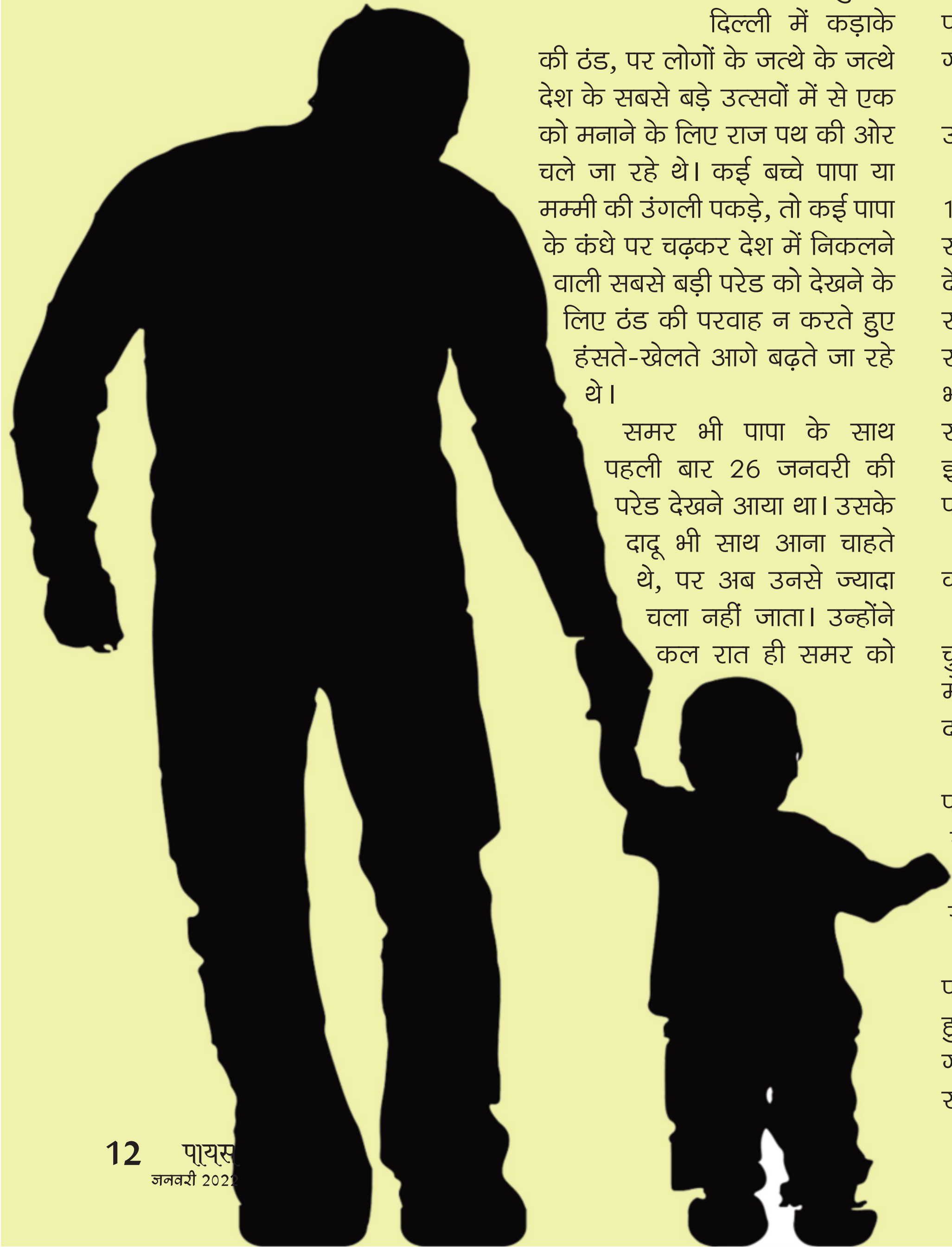

26 जनवरी की सुबह। दिल्ली में कड़ाके की ठंड, पर लोगों के जत्थे के जत्थे देश के सबसे बड़े उत्सवों में से एक को मनाने के लिए राज पथ की ओर चले जा रहे थे। कई बच्चे पापा या मम्मी की उंगली पकड़े, तो कई पापा के कंधे पर चढ़कर देश में निकलने वाली सबसे बड़ी परेड को देखने के लिए ठंड की परवाह न करते हुए हंसते-खेलते आगे बढ़ते जा रहे थे।

समर भी पापा के साथ पहली बार 26 जनवरी की परेड देखने आया था। उसके दादू भी साथ आना चाहते थे, पर अब उनसे ज्यादा चला नहीं जाता। उन्होंने कल रात ही समर को बताया था, "पता है, मैं भी अपने पापा के साथ भारत में मना पहला गणतंत्र दिवस देखने गया था।"

"अच्छा! कब?" नन्हे समर ने उत्सुकता से पूछा।

"हमारे देश की आजादी के बाद 1950 में। उस साल भारत में संविधान लागू हुआ था और हमारा देश गणतंत्र बना। इसी दिन डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारत के पहले राष्ट्रपति बने। समारोह के बाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति के साथ सभी लोग इंडिया गेट के पास बने इर्विन स्टेडियम पहुंचे। मैं भी अपने पापा के साथ उसमें था।"

"अरे, वाह! अब वह स्टेडियम कहां है?" समर ने पूछा।

"तुम उस स्टेडियम में खेलने जा चुके हो। अब उसी स्टेडियम को मेजर ध्यानचंद स्टेडियम कहते हैं।" दादाजी मुसकराकर बोले।

समर पापा के साथ राजपथ पर पहुंच गया, जहां समारोह होना था। समर के पापा को पास मिला हुआ था। उनकी सीट मुख्य मेहमानों की सीट के बिल्कुल सामने थी।

समर पहली बार रिपब्लिक डे परेड देखने आया था। वहां लोगों का हुजूम देखकर उसकी आंखें फैल गईं। उसने पापा से पूछा, "दिल्ली के सारे लोग इसे देखने आते हैं?"

"अरे, नहीं! ये सब लोग दिल्ली के नहीं हैं। पूरे भारत से लोग इस राष्ट्रीय त्योहार में भाग लेने आते हैं।" पापा मुसकराकर बोले।

"पर जनवरी में इतनी ठंड होती है। लोगों को मुश्किल होती है। इसी दिन को क्यों चुना गया, गणतंत्र दिवस के रूप में?" समर ने पूछा।

उसके पापा ने उसे अपने से सटा लिया, फिर प्यार से बोले, "इस दिन को इसलिए भी चुना गया, क्योंकि देश की गुलामी के दौरान 26 जनवरी 1930 को पूर्ण स्वराज का नारा दिया गया था।"

"अच्छा!" अब समर की समझ में बात आ गई।

"गणतंत्र दिवस के बहाने हम अपने देश के लिए काम करने वाले वीरों को याद करते हैं। आज के दिन देश के लिए अपनी जान देने को तैयार सेना के वीरों को पुरस्कृत किया जाता है। देश का नाम रोशन करने वाले लोगों को पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।"

"आज वीर बच्चे भी हम देखेंगे?" समर ने उत्साह से पूछा।

"हां बेटा! तुम्हारे स्कूल में भी स्काउट होते हैं न! ऐसा ही एक स्काउट था हरिश्चंद्र। 2 अक्तूबर 1957 को दिल्ली के रामलीला मैदान में एक समारोह के दौरान टेंट में आग लग गई थी। उस समारोह में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भी शामिल थे। 14 साल के स्काउट हरिश्चंद्र ने बहादुरी दिखाकर चाकू से टेंट को चीरकर हजारों लोगों की जान बचाई थी। इस घटना के बाद नेहरू जी के सुझाव पर बच्चों के लिए राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार शुरू किए गए और पहला सम्मान हरिश्चंद्र को मिला।"

"मैं भी वीर बनूंगा। आप देखना, एक दिन वीरता पुरस्कार पाकर मैं भी हाथी पर बैठकर यहां परेड में भाग लूंगा।" समर अपना सीना फुलाते हुए बोला, तो उसके पापा हंस पड़े। फिर बोले, "जरूर मेरा राजा बेटा। पर हाथी पर सवारी तब निकलती थी, जब मैं बच्चा था। अब तो वीर बच्चे जीप पर लाए जाते हैं।"

इतनी देर में कार्यक्रम शुरू हो गया। पहले प्रधानमंत्री जी का काफिला आया। फिर काफी देर के बाद राष्ट्रपति जी आए। उनके साथ विदेशी मेहमान देखकर समर चौंका, तो उसके पापा ने बताया, "यह परंपरा पहले गणतंत्र दिवस से चली आ रही है। हमारे पहले अतिथि इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो थे।"

"एक चीज मैं भी बताऊं पापा। ऑस्ट्रेलिया का राष्ट्रीय दिवस भी 26 जनवरी ही है। इसी दिन 1788 में ब्रिटिश लोग ऑस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स में उतरे थे और वहां ब्रिटिश झंडा फहराया गया था। और हां, युगांडा में 26 जनवरी लिबरेशन डे के रूप में मनाया जाता है।" बड़े गर्व से समर ने बताया।

पापा को यह बात मालूम थी, पर बेटे का उत्साह बढ़ाने के लिए उन्होंने यह बात जाहिर नहीं की।

समारोह शुरू हुआ। सैनिकों के प्रदर्शन के बाद भारत के राज्यों की झांकियां, स्कूली बच्चों के डांस देखकर समर तो बहुत खुश हुआ। जब उसके स्कूल के ग्रुप ने अपना डांस दिखाया, तो वह खड़े होकर जोर-जोर से ताली बजाने लगा।

समारोह के बाद आसमान में हवाई करतब देखकर समर खुशी के मारे खिल उठा। ❀

आफत बनी आइसक्रीम

मिन्नी को आइसक्रीम बहुत पसंद है। सर्दी हो या गरमी। उसे जब जहां आइसक्रीम दिख जाए, वह उसे खाने के लिए मचलने लगती है। गरमी में तो मम्मी उसकी जिद मान लेती है, लेकिन सर्दी में वे उसे आइसक्रीम खाने देने से साफ मना कर देती हैं।

इस साल जनवरी के महीने में मिन्नी के ताऊजी की बेटी आभा की शादी थी। सभी लोग इसमें जाने की तैयारी में जुटे थे। कभी कपड़े खरीदे जा रहे थे, तो कभी उनसे मैच करते जूते-चप्पल। मिन्नी के लिए भी बढ़िया ड्रेस खरीदी गई। सारा दिन घर में शादी से जुड़ी बातें होतीं।

“मम्मी, शादी के खाने में क्या-क्या बनेगा?” मिन्नी ने उत्सुकता से पूछा, तो मम्मी हंस दी।

“शादी में बहुत कुछ बनने वाला है मिन्नी। कई तरह की मिठाइयां, दही-बड़े, कचौरी और बहुत तरफ के फास्टफूड भी। तुम्हें बहुत मजा आएगा।” मम्मी ने बताया।

“आइसक्रीम भी?” मिन्नी ने आगे पूछा।

“हां, आइसक्रीम भी। और एक तरह की नहीं, बल्कि कई तरह की। बटर स्कॉच, नट्स एंड क्रीम और केसर पिस्ता भी। लेकिन तुम इनसे दूर ही रहना। सर्दी बहुत होगी, तुम बीमार पड़ सकती हो।” मम्मी ने उसे जानकारी देने के साथ-साथ हिदायत भी दी, लेकिन मिन्नी ने तो आइसक्रीम के फ्लेवर से आगे कुछ सुना ही नहीं। वह तो मन ही मन उनका स्वाद ले रही थी।

मिन्नी ने शादी में बहुत मजे किए। आज रात शादी का मुख्य समारोह था। इधर मम्मी शादी की रस्मों में व्यस्त थीं और उधर मिन्नी आइसक्रीम खाने की ताक में। मिन्नी बहुत कोशिश कर रही थी कि किसी तरह आइसक्रीम का एक स्कूप ही खाने को मिल जाए, लेकिन पापा थे कि उस पर बराबर निगाह रखे हुए थे। मिन्नी के मुंह में पानी तो आ रहा था, लेकिन पापा के सामने वह कुछ भी नहीं कर पा रही थी। आखिर मिन्नी को वह अवसर मिल ही गया।

तेज बैंड बाजे की आवाज से साफ लग रहा था कि बरात दरवाजे पर आ गई है। जैसे ही बरात आई, पापा उसके स्वागत में व्यस्त हो गए और जैसे ही पापा मिन्नी की आंखों से ओझल हुए, वैसे ही मिन्नी दौड़कर आइसक्रीम के स्टॉल पर चली गई। एक-एककर उसने आइसक्रीम के सभी स्वाद चख डाले। सबसे अधिक उसे केसर पिस्ता भाया। स्वाद-स्वाद में मिन्नी ने लगातार पांच कप केसर पिस्ता आइसक्रीम के खा लिए।

तभी मिन्नी ने देखा कि बरात स्वागत का कार्यक्रम खत्म हो गया और अब पापा उसकी तरफ ही आ रहे थे। मिन्नी ने फटाफट जूठा कप डस्टबिन में डाला और अच्छी बच्ची की तरह कुर्सी पर बैठकर शादी का आनंद लेने लगी।

“मिन्नी! तुमने आइसक्रीम तो नहीं खाई ना?” पापा ने उससे पूछा तो घबराई हुई मिन्नी ने ना में सिर हिला दिया। हालांकि वह पापा से झूठ नहीं बोलना चाहती थी लेकिन उनकी डांट के डर से कह दिया।

“शाबास बच्ची। अब खाना खा लो।” कहकर पापा ने उस पर विश्वास करते हुए उसे प्यार किया और मेहमानों के साथ व्यस्त हो गए। मिन्नी को अब खाने की जरा भी भूख नहीं थी। वह चुपचाप बैठकर वरमाला का कार्यक्रम देखने लगी।

थोड़ी देर बाद मिन्नी के गले में खराश सी होने लगी। फिर गले में दर्द भी होने लगा। कुछ ही घंटों में दर्द इतना बढ़ गया कि उसे बुखार चढ़ गया। मिन्नी अपनी मम्मी के पास दुबक गई। मम्मी ने उसे छुआ तो उन्हें बुखार का पता चला।

उन्होंने तुरंत मिन्नी के पापा को बुलाया और उसे बुखार की दवा दिलाई। आधे घंटे में बुखार तो उतर गया लेकिन गले का दर्द जरा भी कम नहीं हुआ। सुबह होते-होते तो मिन्नी की हालत ऐसी हो गई कि उससे पानी भी नहीं निगला जा रहा था। पापा उसे डॉक्टर के पास लेकर गए। डॉक्टर अंकल ने पहले उसका गला छूकर देखा और फिर उसे मुंह खोलने के लिए कहा। अंकल ने एक टॉर्च से उसके गले को अंदर तक देखा और मुसकराने लगे।

"शादी में कितनी आइसक्रीम खाई थी?" अंकल ने पूछा, तो मिन्नी अपनी चोरी पकड़े जाने के डर से सकपका गई। पापा भी चौंक गए।

"ज्यादा आइसक्रीम खाने से टॉन्सिल हो गए हैं। मैं दवा दे रहा हूं, तीन दिन में ठीक हो जाएंगी। और हां, नमक और गरम पानी के गरारे करो।" डॉक्टर अंकल ने पापा को समझाते हुए कहा।

गोली लेना तो मिन्नी को आता था लेकिन गरारे करने वाली आफत उसके लिए एकदम नई थी। मम्मी ने उसे गरारे करना सिखाया भी लेकिन हर बार नमक वाला पानी उसके पेट में चला जाता और वह उलटी कर देती।

"अगर पहले पता होता कि आइसक्रीम खाने के बाद नमक वाला कड़वा पानी निगलना पड़ेगा, तो इतनी ज्यादा आइसक्रीम खाती ही नहीं।" मिन्नी मन ही मन अपने आइसक्रीम खाने वाले निर्णय पर पछता रही थी।

उसने तय कर लिया कि चाहे सर्दी हो या गरमी, भविष्य में जब भी आइसक्रीम खानी होगी, तब वह मम्मी-पापा को बताकर कम मात्रा में ही आइसक्रीम खाएगी। ❁

अपने रचनाकार को जानिए

आशा शर्मा : राजस्थान सरकार के विद्युत विभाग में सहायक अभियंता। साथ ही लेखन भी। अब तक 6 संग्रह प्रकाशित। करीब बीस पत्र-पत्रिकाओं में सैंकड़ों रचनाएं प्रकाशित। राजस्थान साहित्य अकादमी एवं जिला प्रशासन, बीकानेर सहित दर्जनों राष्ट्रीय स्तर के सम्मान एवं पुरस्कार। दूरदर्शन एवं आकाशवाणी पर रचनाएं प्रसारित। रचनाओं का नेपाली, अंग्रेजी, पंजाबी, उड़िया, सिंधी, कन्नड़, तमिल एवं राजस्थानी भाषा में अनुवाद

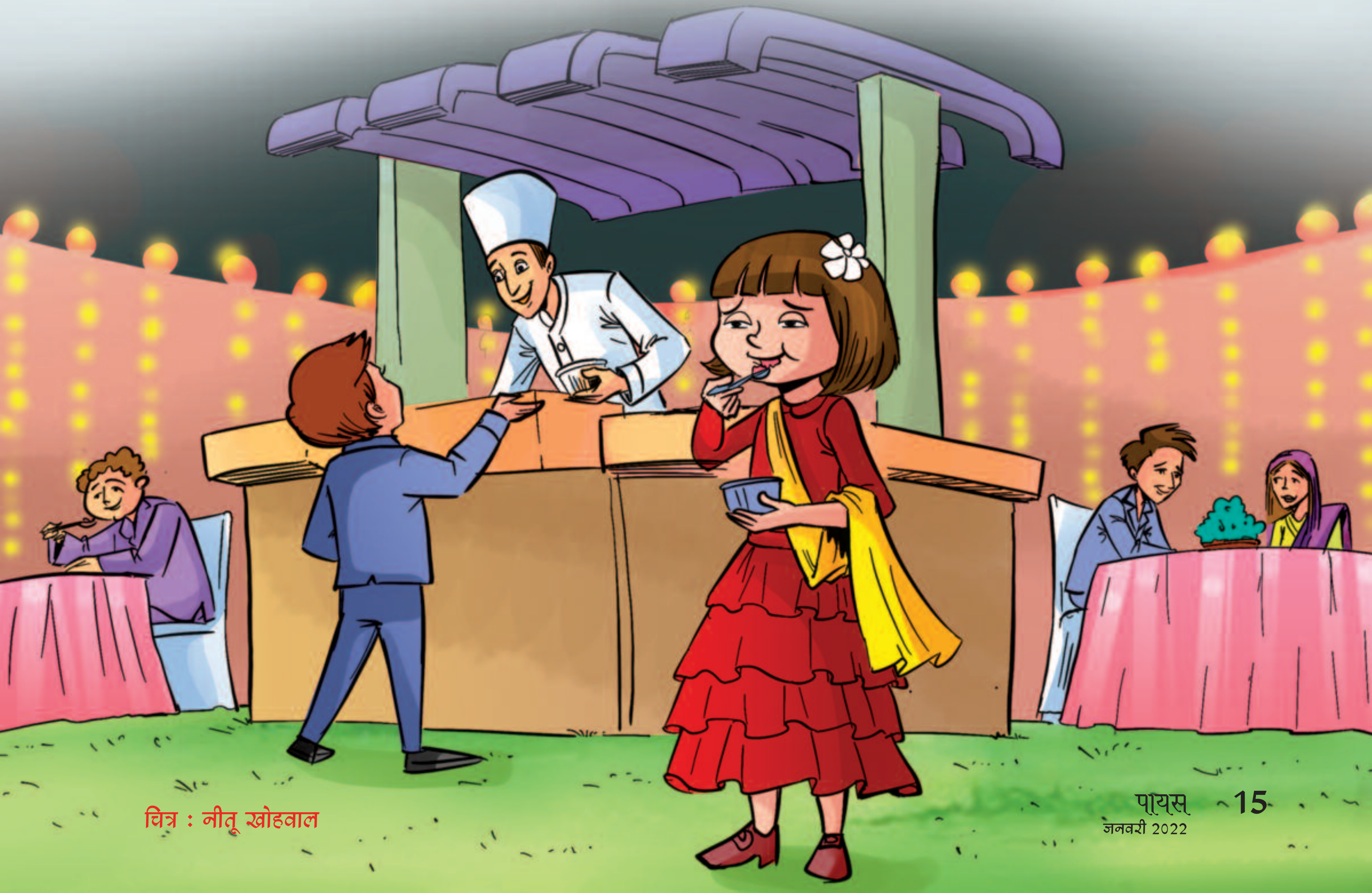

चित्र : नीतू खोहवाल

नए साल पर नया प्रण

नया साल आ चुका हैं। हर साल की तरह ये साल भी बस यूं ही निकल जाएगा। वैसे देखा जाए, तो नए साल का इंतजार युवाओं से ज्यादा बच्चों को होता है। आने वाले नए साल का उल्लास और लाखों उम्मीदें आंखों में किसी जुगनू की तरह चमकती हैं।

नए साल में कई लोग हैं, जो रेजुलेशन यानी की संकल्प लेते हैं, कि उन्हें नए साल में क्या करना है और क्या नहीं। अच्छी चीज को अपनाने और बुरी चीज को छोड़ने के लिए संकल्प काफी अच्छा जरिया है।

तो क्यों ना आप बच्चे भी संकल्प लें, जिससे आपकी कुछ आदतों में सुधार हो सके। अच्छी आदत की शुरुआत के लिए नए साल से बेहतर मौका कोई और हो ही नहीं सकता। आप इसके लिए मजेदार तरीके भी अपना सकते हैं, जिससे आप में इस रेजुलेशन यानी कि संकल्प के प्रति इंटरेस्ट बढ़े।

मिलकर लें संकल्प

खुद को प्रोत्साहित करने के लिए आप अपने पैरेंट्स के साथ बैठें, और अपने लक्ष्य को निर्धारित करने में उनकी मदद लें। आपको कौन सी आदत छोड़नी है और कौन सी आदत को अपनी जिंदगी में शामिल करना है, इस बारे में उनसे पूछें और आपके लिए क्या सही है।

संकल्प को बनाएं मजेदार

यदि आपकी उम्र 10 साल से कम है, तो हफ्ते भर पढ़ने का लक्ष्य रखें लेकिन हफ्ते के अंत में दोस्तों के साथ मजेदार एक्टिविटी करें, ताकि आप अगले हफ्ते ताजगी से भरपूर रहें। अगर लक्ष्यों को बीच-बीच में आप मजेदार ट्विस्ट देते रहेंगे, तो ये लक्ष्य पूरा करते-करते आप के अंदर ये अच्छी आदतें कब पनपने लगेंगी, ये आपको भी पता नहीं चलेगा।

इन बातों का लें संकल्प

अगर संकल्प को लेकर आपके मन में कुछ संशय है कि आपको क्या संकल्प लेना चाहिए या क्या नहीं, कि आप अपनी कुछ आदतों में सुधार के साथ-साथ माता-पिता का भी मन जीत सकें, तो यहां आपको बिल्कुल भी परेशान होने की जरूरत नहीं है। यहां आपकी इस परेशानी का भी हल है। इन बातों का बस ध्यान रखें-

अपने रचनाकार को जानिए

मोनिका अग्रवाल : शिक्षा : समाज शास्त्र में स्नातक और कंप्यूटर इंजीनियरिंग डिप्लोमा। सम्प्रति : 'अनुगूंज' कहानी संग्रह; 'पतझड़ में मधुमास' कहानी संग्रह; 'किड्स स्टोरीज' बाल कहानी संग्रह; 'अम्मा कहती थी' सांझा काव्य संग्रह! पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं।

- अपने खिलौने या गैजेट्स सही जगह रखने का संकल्प लें।
- दिन में दो बार ब्रश करने का संकल्प करें।
- खाना खाने से पहले हाथ धोने की आदत का संकल्प लें।
- खाने में हर तरह की सब्जियों को खाने की आदत डालने का संकल्प लें।
- खाना खाने के बाद टेबल साफ़ करने की आदत का संकल्प लें।
- सड़क पर चलते समय बड़े का हाथ पकड़कर चलने का संकल्प लें।
- अन्य बच्चों के साथ बिना भेदभाव के अच्छे से व्यवहार करने का संकल्प लें।

ये कुछ ऐसी आदतें हैं, जो आप में होनी ही चाहिएं । अगर आप में ये आदत नहीं भी हैं, तो कोई बात नहीं। नए साल में आप अपने लिए लक्ष्य तय करें। आप बोर नहीं होंगे, बल्कि बड़े ही मजे से पूरे कर पाएंगे अपने संकल्प को। जब एक बार अपने बनाए हुए रूल्स को फॉलो करेंगे, तो आपको इन अच्छी बातों की आदत लग जायेगी।

तो आज से ही आप भी नये साल के स्वागत के लिए तैयार हो जाएं। नया साल आपमें अच्छी आदतों की सौगात लेकर आएगा।

बाघ अब नहीं उदास

अभ्यारण्य का बाघ आजकल बहुत उदास था। अकेले घूमते-फिरते उसे ऊब होने लगी थी। अब न उसे शिकार करने में मजा आता था, न दौड़ लगाकर शरीर को चुस्त और फुर्तीला रखने में। वह बड़ी-बड़ी घासों के बीच पत्थरों में बनी अपनी गुफा में ही पड़ा रहता। मक्खियां मुंह पर भिनभिनाती रहतीं। वह क्रोधित होने के बजाय उन्हें पंजे से उड़ाकर दूसरी करवट बदल लेता।

आजकल जंगल में सन्नाटा छाया हुआ था। जंगल के बीच बनी हुई कच्ची रोड और उससे जुड़े गलियारे सुनसान पड़े रहते। पहले सुबह से शाम तक इन कच्चे गलियारों में पर्यटकों की भीड़ लगी रहती थी। लोगों के समूह खुली जिप्सी में कैमरे लिए हुए खोजी आंखों से इधर-उधर निहारते रहते। कोई जानवर दिख जाता, तो गाड़ी बंद करके चुपचाप खड़े हो जाते और हर्ष और अचंभे से किलकारियां भरते हुए फोटो खींचने लगते।

कुछ लोग हाथी की सवारी भी करते। हाथी झूम-झूमकर चलता, तो उसका हौदा हिलने से महिलाएं और बच्चे चिल्लाने लगते। यह देखकर फीलवान हंसने लगता। हाथी पर सवारी करने वालों को ज्यादा चीजें दिख जाती थीं, क्योंकि

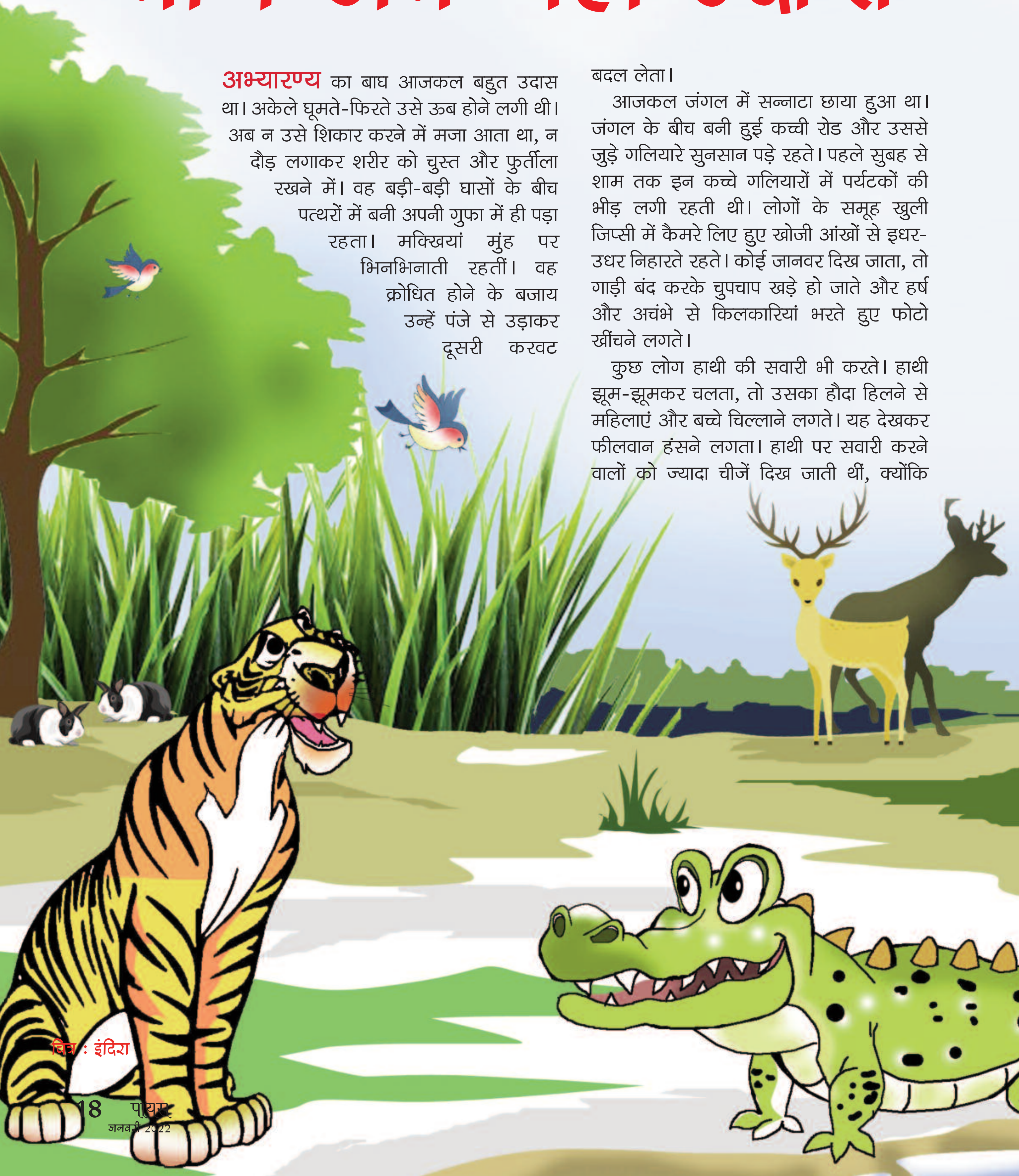

चित्र : इंदिरा

हाथी रास्ते से अलग हटकर घास-फूस में भी चला जाता था।

जंगल के बीचो-बीच, जहां तीन नदियों का संगम था, वहां एक मैदान में कुछ आधुनिक सुविधाओं वाली झोंपड़ियां बनी थीं। बहुत से लोग उन झोंपड़ियों में रात बिताते। मैदान चारों ओर ऊंचाई तक कंटीले तारों से घिरा हुआ था। रात को आग चलाकर लोग देर तक नाच-रंग करते रहते।

एक बार बाघ गलती से उधर निकल आया था। वह अभी किशोर था। शोर और रोशनी देखकर वह एक पेड़ के पीछे से छिपकर उन्हें देखने लगा।

बाघ चुपचाप खड़ा होकर लोगों को नाचते-गाते देख रहा था कि तभी एक आदमी खाना खाकर अपनी पत्तल कंटीले तारों के पीछे फेंकने आया। अचानक उसकी नजर साल के एक मोटे तने के पीछे जलती हुई दो भयानक आंखों पर पड़ी। वाकई अंधेरे में बाघ की आंखें बहुत डरावनी लग रही थीं।

वह आदमी चीखता हुआ भागा। सारे लोग जमा हो गए। वहां मौजूद गार्ड भी टॉर्च जलाकर देखने लगे। उन्होंने सांत्वना दी कि कोई भी जानवर कंटीले तारों को पार करके इधर नहीं आ सकता है। सब लोग निश्चिंत रहें

पर वहां मौजूद लोग बहुत डर गए थे। सबने मोटी-मोटी लकड़ियां डालकर आग और तेज जला दी और गार्ड को रात भर तेज आग जलाए रखने की हिदायत देकर अपनी-अपनी झोंपड़ियों में चले गए।

वह दिन था और आज का दिन, बाघ दोबारा उधर नहीं गया। बाघ को पिछली बातें याद आईं, तो उसके चेहरे पर हलकी-सी मुसकान बिखर गई। वह उठा और बेमन से यूं ही नदी की ओर बढ़ चला। नदी लबालब भरी थी। वह किनारे जाकर बैठ गया।

तभी बाघ ने देखा, एक मगरमच्छ तन पर बालू लपेटे पड़ा है। मगरमच्छ से बाघ का पुराना बैर था। बाघ जब भी पानी पीने आता, मगरमच्छ उसे नदी में खींचने की घात में लगा रहता। पर आज वह भी उदास था।

दोनों थोड़ी देर चुप रहे। फिर मगरमच्छ ने ही धीरे से कहा, "आजकल मन नहीं लगता।"

"हां...।" बाघ बोला, "सही कह रहे हो, दोस्त। सारा जंगल कितना सूना-सूना-सा लग रहा है। गाड़ियों की घरघराहट, लोगों की चहकती आवाजें बच्चों की किलकारियां सुने एक लंबा समय हो गया है।"

"लोगों का आना-जाना बंद होने से जंगल में कैसी उदासी छाई है।"

तभी हिरनों की एक टोली पानी पीने के लिए नदी के किनारे उतरी। पर बाघ और घड़ियाल पर नजर पड़ते ही वे उछलकर भागने लगे।

"पी लो पानी, कोई कुछ नहीं कह रहा।" मगरमच्छ ने पुकारकर कहा।

फिर भी हिरनों का भय कम नहीं हुआ। घबराहट में उन्होंने जल्दी-जल्दी पानी पिया और नदी के करार पर गिरते-फिसलते भाग खड़े हुए।

तभी किसी चिड़िया की चीं-चीं गूंजी। मगरमच्छ खुश हो गया, "अरे वाह, मेरी दोस्त आ गई। अब थोड़ा समय उससे बातचीत में कटेगा।"

"तुम्हारी दोस्त... ?"

"हां, जब मैं शिकार के बाद तट पर मुंह खोलकर लेटता हूं तो वह मेरे दांतों की सफाई करती है। इसीलिए मैं उसे दोस्त चिड़िया कहता हूं।"

"अरे दोस्त, तुमने कुछ सुना ?" चिड़िया की आवाज खुशी से लहरा रही थी।

"क्या हुआ, मुझे भी बताओ।" बाघ उठकर नजदीक आ गया।

पास ही घास में सोया अजगर भी सिर उठाकर उन्हें देखने लगा।

अपने लेखक को जानिए

डॉ. मोहम्मद अरशद खान : कॉलेज में अध्यापन के साथ-साथ लेखन भी। अच्छे और प्रसिद्ध बाल कहानीकार। बच्चों के लिए उपन्यास, कविता एवं कहानी विधा की बाल 14 पुस्तकें प्रकाशित। कई पुस्तकों का मराठी, अंग्रेजी, उड़िया और गुजराती भाषा में अनुवाद। भारतेंदु हरिश्चंद्र एवं हरिकृष्ण देवसरे सहित अनेक पुरस्कार प्राप्त।

"बारिश का मौसम खत्म हो चुका है। कल से पर्यटकों के लिए जंगल फिर से खुलनेवाला है।"

"क्या सचमुच...!" मगरमच्छ चहका।

"हां, जीवन की चहल-पहल, खुशियां, महक-चहक फिर से आने वाली हैं!" चिड़िया ने खुशी से गोता खाया।

"अरे वाह, तब तो इसी खुशी में मैं नदी का एक चक्कर लगाकर आता हूं।" मगरमच्छ ने कहा और नदी में उतर गया। नदी में उतरते ही उसके शरीर का बालू धुल गया गया और उसकी मटमैली त्वचा चमकने लगी।

"और मैं पूरे जंगल में दौड़ लगाकर आता हूं।" बाघ ने कहा और पूरी ऊर्जा के साथ उछलकर बांध के ऊपर चढ़ गया।

"मैं भी थोड़ा घूम-टहलकर आता हूं।" अजगर अपना आलस त्यागकर धीरे-धीरे सरकने लगा।

"तुम सब जाओ, मैं तो यही बैठकर कोई सुरीला गीत गाऊंगी और ईश्वर से प्रार्थना करूंगी कि हम सबकी, इस पूरी धरती की खुशियां हमेशा बनी रहें।"

और चिड़िया साल की सबसे ऊंची डाल पर बैठकर मीठा गीत गाने लगी। ❀

कोहरे का कोट

कोहरे का कोट पहन, नया साल आया है।
कैसे नहाएं,यह सोचकर घबराते हैं।
सर्दी के मारे दांत, तबला बजाते हैं ।
रजाई में घुसना ही, हम सबको भाया है।
कोहरे का कोट पहन, नया साल आया है।

तीखी-ठंडी हवा, शूल चुभा जाती है।
लिखने में मेरी अंगुली ठिठुर जाती हैं।
मुझ पर किसी को जरा, तरस नहीं आया है।
कोहरे का कोट पहन, नया साल आया है।

मानो मां, आज मैं, स्कूल नहीं जाऊंगा।
गरम पकौड़े और हलुआ ही खाऊंगा।
सूरज ने भी आज, अवकाश मनाया है।
कोहरे का कोट पहन, नया साल आया है।

रचनाकार को जानिए

डॉ अलका अग्रवाल : सेवानिवृत्त प्राचार्या, बाल कविता, कहानी की कई पुस्तकें प्रकाशित। 1 बाल उपन्यास, शोध की 2 पुस्तकें, 2 कविता संग्रह और 1 कहानी संग्रह प्रकाशित। अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त।

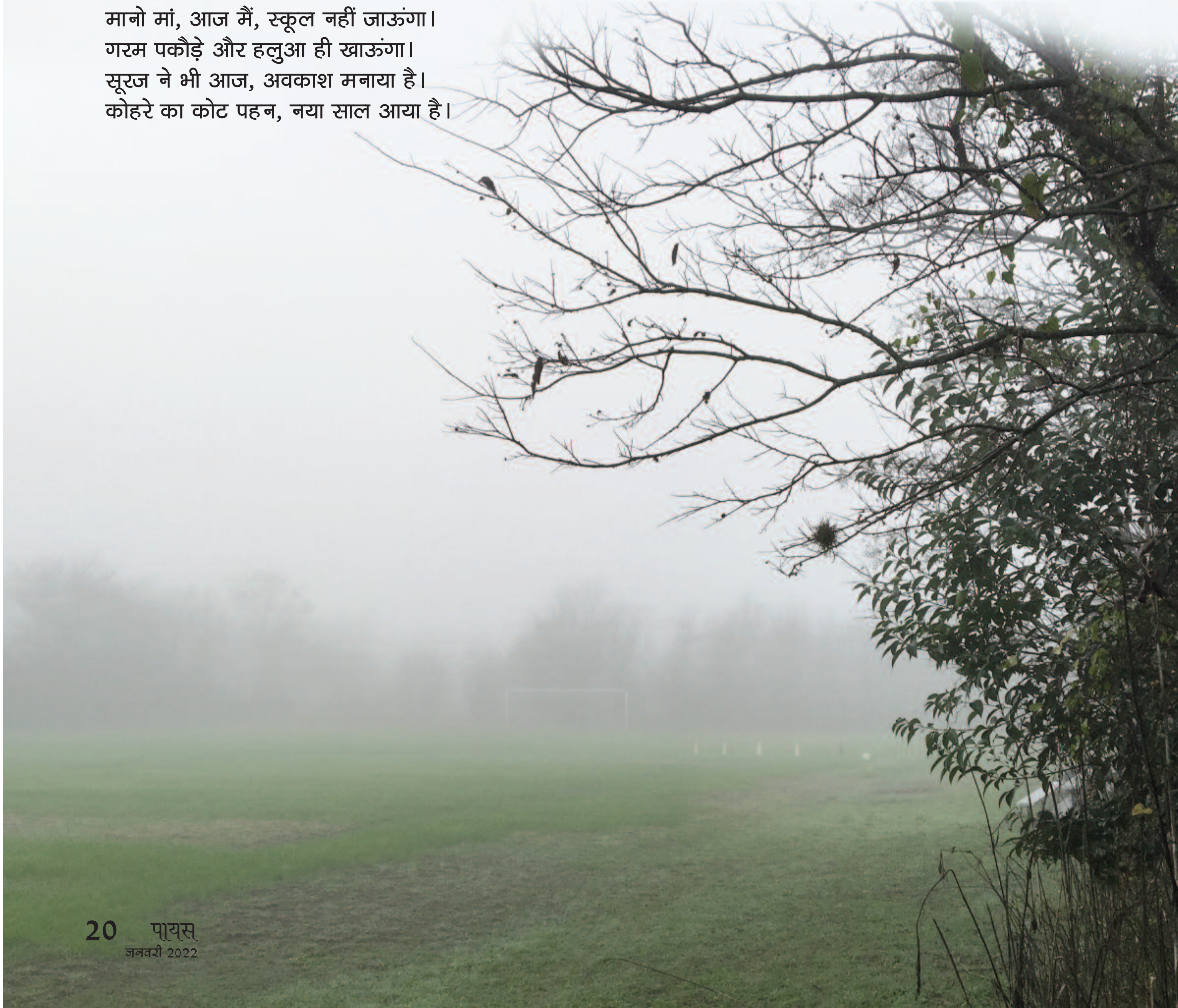

यही दुआ है

अपने लेखक को जानिए

शादाब आलम : बालसाहित्य की लगभग सभी विधाओं के साथ मुख्य रूप से बाल कविता एवं बाल गीत लेखन। हंसी का चूरन (बालकाव्य संग्रह) लोकोदय प्रकाशन से प्रकाशित।

खाली करे किराए का घर राजू का परिवार
खुद के घर में बस जाने का सपना हो साकार।
हसन चचा पर चढ़ी उधारी हुआ बहुत नुकसान
पहले जैसी फिर से उनकी चलने लगे दुकान।
एक साल से दादी जी के नहीं उठ रहें पैर
हो जाएं वो खड़ीं, साथ में करें हमारे सैर।
कुछ दिन से गुम हैं, कॉलोनी के भैया अब्बास
वापस आ जाएं वो अपने माँ-बाबा के पास।
मामा-मामी जोर-जोर से लड़ते हैं दिन-रात
रहें प्यार से, कभी करें ना झगड़े वाली बात।
हमको तो विद्यालय जाना सचमुच बहुत पसंद
खुले रहें विद्यालय अपने, कभी नहीं हों बंद।
जो पहले से ही खुश हैं वे रहें सदा खुशहाल
यही दुआ है, भला सभी का हो जाए इस साल।

सबका आसमान

आज सूर्य अपने धीमे प्रकाश के साथ जैसे ही बाहर आए, उन्होंने महसूस किया कि आज लोग सुबह-सवेरे से ही छतों पर मौजूद हैं। तभी उन्हें याद आया, आज तो लोहड़ी का त्यौहार है। कल तो मकर संक्रांति, पोंगल और बिहू का त्यौहार है।

सूरज ने देखा लोगों ने सुबह सवेरे स्नान करके उन्हें लोटा भर जल और तिल चढ़ाना शुरू कर दिया।

अब तक तो छोटे-बड़े, सभी अपनी अपनी डोरी और पतंगें लेकर छतों पर आ गए थे।

नीलू पतंग नीले आसमान में सैर करने सबसे पहले आई थी। थोड़ी देर में लाली ने उसे आकर आवाज लगाई। नीलू को खुशी हुई, अब दो सहेलियां आराम से नीले आसमान में उड़ेंगी। कुछ देर में बड़ी सी सफेद पतंग तेजी से उनकी ओर आने लगी थी और उसी के पीछे हरियल भी धीरे धीरे आगे बढ़ रही थी।

आज हलकी हवा के कारण सभी पतंगो को उड़ना अच्छा लग रहा था, हरियल किसी तरह से डरते हुए वहां तक पहुंच ही गई।

सबने उससे डरने का कारण पूछा, तो उसने बताया, "पिछले साल मेरे धागे में एक चिड़िया का बच्चा फंस गया था। इसलिए मुझे उड़ाने वाले इस बार मांजा ही नहीं लाए। वह बेचारा चिड़िया का बच्चा मरते-मरते बचा था।"

लाली ने कहा, "ये पक्षी हमारे बीच आते ही क्यों है ?"

इस पर सफेद बोली, "क्योंकि यह आकाश तो सबका है।"

हलकी पीली पतंग ने कहा, "हम तो कुछ दिनों के लिए ही यहां आते हैं ये तो हमेशा ही यहां उड़ते हैं।"

लाल ने फिर अकड़ कर कहा, "तो हमारे धागे में आकर फंसते क्यों है ?"

सफेद ने कहा, "ये तो अपने रास्ते उड़ते हैं। हम ही उनके बीच में आ जाते हैं। हमें तो स्वयं नहीं पता होता कि हम एक पल में कहां से कहां पहुंच जाती हैं।"

सफेद किसी का भी मजा बिगाड़ना नहीं चाहती थी। इसलिए उसने सभी पतंगो को पक्षियों का ध्यान रखने की सलाह दी।

अपने रचनाकार को जानिए

प्रभा पारीक : प्रभा पारीक : मूलतः राजस्थान की, पर गत चालीस वर्षों से गुजरात में निवास। लेखिका, स्वतंत्र पत्रकार, बाल साहित्यकार, बाल साहित्य हेतु निरंतर प्रयासरत। अनेक समाचार पत्र-पत्रिकाओं में सतत् लेखन। तीन उपन्यास, तीन कहानी संग्रह प्रकाशित। आकाशवाणी जयपुर व भरूच स्थानीय टीवी चैनल से अनेक कथावार्ता प्रसारित।

सारी पतंगें देख भी रही थीं कि छतों पर, मैदानों में जो लोग थे, वे सभी दाल की पकौड़ी, तिल के लड्डू, मूली, गन्ना, अमरूद, गाजर का हलवा आदि का आनंद ले रहे थे। सब खाने के साथ-साथ अपने मास्क का भी ध्यान रख रहे थे।

सारी पतंगें खुशी से उड़ने लगीं।

फुफ्फो, अव्वा, भाई, अप्पी !

मम्मी की गोद से उतरकर अनाया दूकान में इधर उधर दौड़ने भागने लगी। कपड़े की दूकान में तेज रोशनी थी, और रोशनी भी कई तरह की। अनाया दौड़-दौड़कर खेलने लगी।

थोड़ी देर खेलने कूदने के बाद वह मम्मी के पास आई, और उनका दुप्पट्टा खींचते हुए बोली, "मम्मा, फुफ्फो, अव्वा, भाई, अप्पी।" उसकी आवाज में गजब की चहक थी। मम्मी उसकी बातों को अनसुना कर फिर से कपड़े देखने लगीं।

पर अनाया नहीं मानी, वह रट लगाए थी, "मम्मा, फुफ्फो, अव्वा, भाई, अप्पी।"

दरअसल अनाया अक्सर अपनी बुआ के घर आती-जाती रहती है। उन्हें वह फुफ्फो और उनके बच्चो को अव्वा, भाई, और अप्पी कहकर पुकारती है। उनके साथ उसकी खूब पटती है, खूब खेलती है, खुश रहती है। बुआ के छोटे-छोटे बच्चे तो अनाया के पक्के दोस्त हैं।

अम्मी ने सोचा शायद वह बुआ के घर जाने की जिद कर रही है। वह उससे बोली, "हां-हां चलेंगे, अव्वा से मिलने, भाई से मिलने, फुफ्फो से मिलने।"

अनाया फिर से दुकान का चक्कर लगाने लगी। कुछ देर बाद दोबारा वह मम्मी को आकर खींचने लगी- "अव्वा, अप्पी, भाई।"

मम्मी को समझ आ गया कि वह उन्हें कहीं ले जाना चाहती है।

एक बार तो उन्हें लगा, कहीं ऐसा तो नहीं, उसकी बुआ भी इसी दुकान पर हो, लेकिन अगले ही पल उन्हें याद आया कि वह तो यहां से बहुत दूर रहती है, और अगर वह यहां आती तो उन्हें फोन जरूर करती।

अनाया की जिद पर इस बार वह उसके साथ चल पड़ी। यह देखने के लिए कि वह आखिर किसे अपनी फुफ्फो, अव्वा, भाई और अप्पी कहकर पुकार रही है? अनाया दौड़ती-कूदती हुई आगे आगे चल रही थी।

फिर अचानक से वह एक जगह जाकर रुक गई और मम्मी से चीखकर बोली, "मम्मा, फुफ्फो।"

फिर दूसरी जगह दौड़कर गई, बोली, "अव्वा।" इसी तरह मम्मी को अप्पी और भाई से भी मिलवाया।

सामने जो कुछ था, उसे देखकर मम्मी अपनी हंसी न रोक पाई। कपड़े की दुकान में कई तरह के छोटे-बड़े स्टेचू खड़े थे। जिसे वह अपनी फुफ्फो, भाई, अव्वा और अप्पी समझ रही थी।

अनाया अभी भी एक छोटे स्टेचू के सामने खड़े होकर उससे बाते करने की कोशिश कर रही थी। उससे हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ा रही थी, लेकिन उसकी तरफ से कोई प्रतिक्रिया न मिलने पर मुंह भी बना रही थी।

मम्मी ने अनाया को गोद में उठा लिया और बोलीं, "कल तुम्हारी फुफ्फो के घर जरूर चलेंगे।"

अपने लेखक को जानिए

सिराज अहमद : विगत 10 वर्षो से लेखन क्षेत्र में सक्रिय रहते हुए देश की सभी बाल पत्रिकाओं में लगभग 350 रचनाओं का प्रकाशन। मराठी में अनूदित कहानियों की 4 पुस्तकें प्रकाशित।

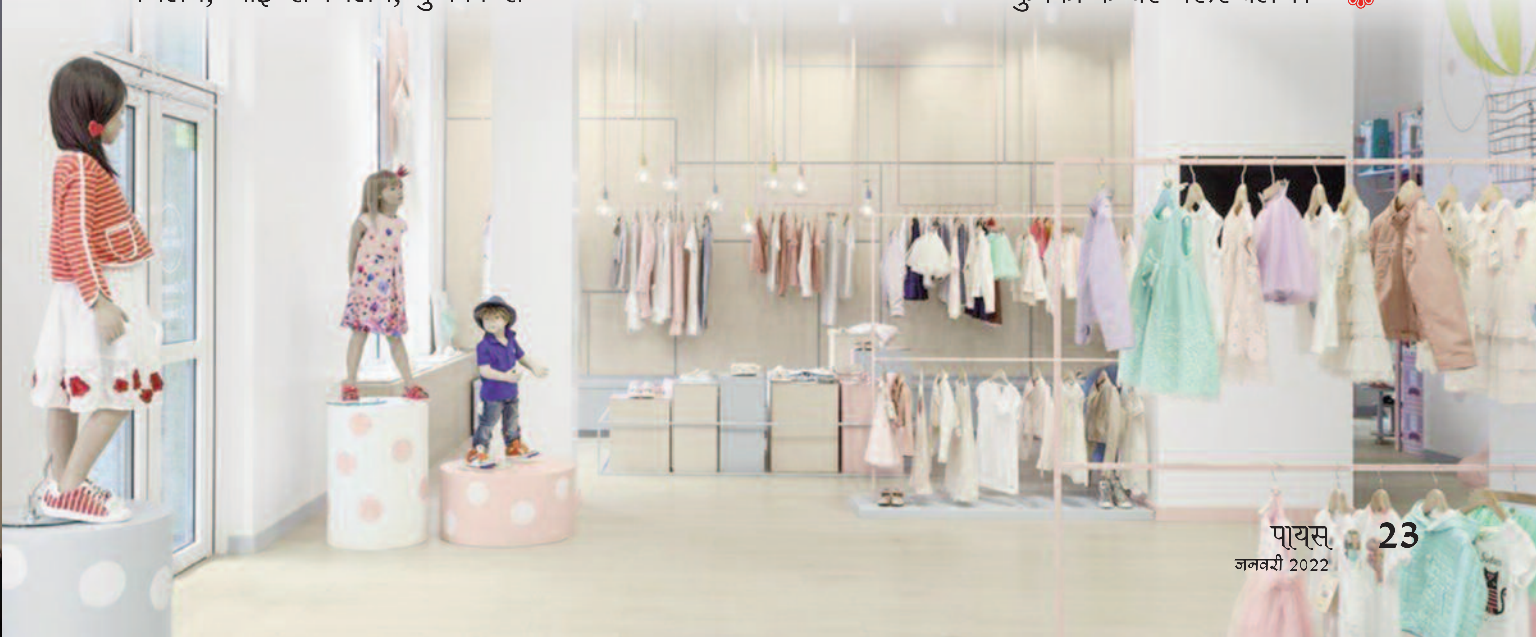

मीठी कहानी गन्ने की

दोस्तो, आज मैं तुम सबको सुनाता हूं, गन्ने की कहानी। तुम जानते ही हो, इसे ईख भी कहते हैं। यही अंग्रेजी में शुगरकेन भी है। तुमने गन्ना जरूर चूसा होगा। जरा बताओ तो कितना मीठा होता है वह? इसके मीठे रस के कारण ही जरूर हमारे पूर्वजों ने इसकी खेती शुरू की होगी।

अब, गन्ने की बात चली है, तो चलो, इसके बारे में अपने प्रिय कवि ओम निश्चल की कविता की कुछ पंक्तियां गाते हैं। वहां गन्ना खूब होता है। तब मैं भी उनके साथ मारीशस में था। यह कविता उन्होंने दूर मारीशस देश में लिखी थी।-

माटी यहां की लाल है, गन्ने के खेत हैं
पुरखों की पुण्य भूमि है, गन्ने के खेत हैं।
हैं खप गई पुरखों की यहां चार पीढ़ियां
सदियों का यह प्रवास है गन्ने के खेत हैं।

मारीशस में हमारे पुरखे? हां दोस्तो, वहां हमारे पुरखों के खून-पसीने पर ही गन्ना पनपा था। बहुत पुरानी बात है यह। बाद में बताऊंगा उसके बारे में।

पहले चलो, अपने देश के गन्ने की बात करते हैं। हमारे पुरखे बहुत कल्पनाशील थे। उन्होंने यह कल्पना भी की थी कि गन्ना कहां से आया होगा। इसीलिए हमारे प्राचीन ग्रंथों में लिखा है कि इसे तो महर्षि विश्वामित्र ने बनाया। त्रिशंकु का नाम सुना होगा तुमने। वह महर्षि विश्वामित्र का भक्त था। उसकी कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर महर्षि विश्वामित्र ने उसे मृत्यु से पहले ही सशरीर स्वर्ग जाने का वरदान दिया। तब लोग सोचते थे, ऊपर आसमान में कहीं स्वर्ग है, जिसमें देवता रहते हैं।

हां, तो उस कथा में कहा गया है कि विश्वामित्र के वरदान से देवता चिंतित हो उठे। उन्हें लगा कि इस तरह तो लोग मृत्यु से पहले ही स्वर्ग पहुंचने लगेंगे। तो, उन्होंने इंद्र देव से प्रार्थना की। त्रिशंकु स्वर्ग के द्वार पर पहुंचा, तो इंद्र ने उसे बाहर धक्का दे दिया। वह नीचे पृथ्वी की ओर गिरा। लेकिन, महर्षि विश्वामित्र ने अपनी शक्ति से उसे ऊपर ही रोक दिया। उन्होंने वहां त्रिशंकु के लिए एक नई

दुनिया बना दी। उसमें कई चीजें पैदा कीं। मिठास के लिए गन्ना पैदा किया। हमारे पूर्वज सोचते थे कि वहीं से गन्ना इस धरती पर आया।

है न मजेदार कल्पना? लेकिन, कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि गन्ना तो पहले बस जंगली घास की तरह उगता था। इसका जन्म हमारे देश भारत में और दक्षिण-पूर्व एशिया के अन्य इलाकों में हुआ। तभी तो हमारे पूर्वज इसे हजारों वर्ष पहले से जानते थे। हमारी प्राचीन संस्कृत भाषा में इसे इक्षु कहते हैं। इसी इक्षु से तो आगे चल कर या आम बोलचाल में यह ईख कहलाया। इसे पवित्र पौधा माना जाता है। तभी तो दीपावली के त्योहार में लोग इसके तने से लक्ष्मी बनाते हैं।

कहने का मतलब यह है कि हमारे पूर्वज हजारों वर्ष पहले भी गन्ने को पहचानते थे और इसकी खेती करते थे। अरे हां, पांच हजार दो सौ वर्ष पहले जब सिकंदर भारत पर आक्रमण करने आया, तो वह और

उसके सैनिक हमारे देश के लोगों को एक मोटी घास चबाते देखकर हैरान रह गए। उन्हें क्या पता, वह तो गन्ना ही था! सिकंदर के सेनापति सेल्युकस के दूत मैगस्थनीज ने गन्ने के बारे में खूब लिखा। लिखा कि भारत के लोग नरकुल जैसी एक घास चबाते हैं जिसमें मधुमक्खियों के बिना ही शहद बनता है। हा! हा!

उन्होंने तो शहद के अलावा ऐसी कोई दूसरी मीठी चीज कभी चखी ही नहीं थी। इसलिए वे गन्ना अपने साथ यूनान ले गए। गन्ना दुनिया का मुंह मीठा करने निकल पड़ा। यह बौद्ध भिक्षुओं के साथ चीन पहुंचा। वे बौद्ध भिक्षु कहते थे, भाई, जितनी मिठास इस गन्ने में है, उतनी ही भगवान बुद्ध के उपदेशों में भी है। जरा इसे चखकर तो देखिए। तो दोस्तो, इस तरह चखते-चखाते गन्ना पहुंच गया जापान, मंचूरिया और मंगोलिया तक। चीनी यात्री ह्वेनसांग और फाहियान ने भारत में गन्ने की खेती और गुड़ बनाने के बारे में बहुत-सी बातें लिखी हैं। चीन का एक सम्राट था, ताई-तोउंग। उसने आज से तेरह-साढ़े तेरह सौ वर्ष पहले हमारे देश के मगध राज्य में गन्ने की चीनी बनाने की तरकीब सीखने के लिए अपने आदमी भेजे थे।

दोस्तो, तीसरी सदी में गन्ना पहुंचा फारस, फिर अरब देशों में फैला और वहां से पहुंचा मिस्र। वहां नील नदी के दोआबे में गन्ने की खूब खेती की जाने लगी। फिर गन्ना पहुंच गया स्पेन से पुर्तगाल तक यानी यूरोप। उधर अफ्रीका महाद्वीप के निकट गोमेरा द्वीप से सन् 1493 में क्रिस्टोफर कोलंबस इसे वेस्टइंडीज के हिस्पानिओला द्वीप में ले गया, जहां यह खूब फला-फूला। वहां से गन्ना उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका तक पहुंच गया।

अपने लेखक को जानिए

देवेंद्र मेवाड़ी : बच्चों के 'देबू दा'। सरल, सरस भाषा में विज्ञान बच्चों और लोगों तक पहुंचाने में माहिर। पूसा इंस्टिट्यूट, पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय और पंजाब नैशनल बैंक में काम किया। हिंदी भाषी प्रांतों में घूमकर हजारों बच्चों को विज्ञान की कहानियां सुना चुके हैं। दर्जनों पुस्तकें प्रकाशित। हाल ही में उन्हें विज्ञान लेखन पर साहित्य अकादमी से पुरस्कार मिला है।

यह प्रशांत महासागर के ताहिती द्वीपों में भी खूब लहलहाया। वहां से एक फ्रांसीसी जलपोत का कमांडर बोगेनविल सन् 1768 में इसे अपने साथ मारीशस ले गया। तुमने बोगनवेलिया का सुंदर फूल देखा होगा। उसका नाम इन्हीं बोगनविल के नाम पर रखा गया है।

जब मारीशस में गन्ने की खेती की जाने लगी, तो यह वहां से फिजी, सूरीनाम, गयाना और त्रिनिनाड तक पहुंच गया। इसकी चीनी बनाकर यूरोप के तमाम देशों को भेजी जाने लगी। इस तरह चीनी का बड़े पैमाने पर व्यापार शुरू हो गया।

लेकिन, चीनी के इस व्यापार के कारण दुनिया में पहली बार गुलामों का भी व्यापार शुरू हो गया। मारीशस, फिजी, गयाना और त्रिनिनाड में गरीब गुलामों के खून-पसीने पर गन्ना पनपाया गया। उन गुलामों पर बहुत अत्याचार किए जाते थे। उन देशों में गन्ने की खेती के लिए न जाने कितने गरीब गुलामों को अपने प्राण देने पड़े। अंग्रेजों ने इन देशों में भारत से बड़ी संख्या में गुलाम भेजे। वे हमारे देश के सीधे-

सादे लोग थे जिन्हें अंग्रेज सोने की अशर्फियां कमाने का सपना दिखाते थे। कहते थे, जमीन में जहां कुदाल मारोगे, वहीं अशर्फियां निकलेंगी।

उन गरीब मजदूरों की पीठ पर कोड़े बरसाकर गन्ने के खेतों में काम कराया जाता था। खेतों में काम करते समय उनके सिर पर धातु का खोल पहना कर, उस पर ताला लगा दिया जाता था ताकि वे

गन्ने का रस न चूस सकें। उनकी कमर में लोहे की जंजीर से भारी वजन बांध दिया जाता था ताकि वे वहां से भाग भी न सकें। सन् 1848 तक भारत से करीब 21,000 गरीब मजदूरों को गुलाम बनाकर मारीशस, गयाना, जमैका और त्रिनिनाड भेजा गया था।

पता है, उस दौर में हमारे देश से कितने मजदूरों को गुलाम बना कर विदेश भेजा गया? अंग्रेजों ने साढ़े चार लाख से अधिक मजदूर मारीशस भेजे, 2 लाख 38 हजार से अधिक गयाना को एक लाख 43 हजार त्रिनिनाड, लगभग 70 हजार फिजी, 36 हजार से अधिक जमैका और 34 हजार से अधिक सूरीनाम तथा अन्य देशों को भेजे। इनमें अधिकांश मजदूर उत्तर प्रदेश और कुछ उत्तराखंड के थे। बस्ती, फैजाबाद, सुल्तानपुर, गोंडा, और आजमगढ़ से बड़ी संख्या में मजदूर उन देशों में भेजे गए। वे गिरमिटिया कहलाते थे। इसलिए क्योंकि वे 'गवर्नमेंट' कांट्रेक्ट में गए थे। गवर्नमेंट का 'गिरमिटिया' बन गया।

दोस्तो, हमें 2 नवंबर का दिन कभी नहीं भूलना चाहिए क्योंकि 2 नवंबर 1834 के दिन ही 48 दिन की लंबी समुद्री यात्रा के बाद कलकत्ता से होकर हमारे देश के 36 गिरमिटिया मजदूर मारीशस पहुंचे थे। उनसे कहा गया था कि उन्हें हर महीने 5 रुपए तनखा मिलेगी। खाना-पहनना मुफ्त कंपनी की ओर से। इससे भी बड़ा लालच यह था कि छह महीने की तनखा एडवांस में दी जाती थी।

भारत से हमारे वे पूर्वज गिरमिटिया मजदूरों के रूप में मारीशस के जिस घाट पर उतरते थे, हमने वह 'आप्रवासी घाट' भी देखा। हमने वे 16 सीढ़ियां भी देखीं जिनसे धक्का देकर उन गरीब मजदूरों को सीमेंट-कंक्रीट के बंद कमरों में धकेला जाता था। आज वे 'स्वर्णिम सीढ़ियां' कहलाती हैं। हमारे उन पूर्वजों के पैरों के निशान भी वहां बने हुए हैं जिनको हमने प्रणाम किया। वहां एक संग्रहालय भी है, जिसमें उन मजदूरों के जीवन और उन पर हुए बर्बर अत्याचार की कहानी दर्शायी गई है।

अपने उन पूर्वजों और मारीशस में उनके खून-पसीने पर पनपी गन्ने की फसल को याद करते हुए ही प्रिय कवि ओम निश्चल ने अपनी मार्मिक कविता की इन पंक्तियों में हम सबका दर्द भर दिया हैः

दिल जाकर हिल गया अप्रवासी घाट पर
कोड़ों की मार दर्ज है, गन्ने के खेत हैं।

आज दुनिया में सबसे अधिक गन्ना ब्राजील में उगाया जाता है। फिर भारत में। तीसरा और चौथा स्थान यूरोप और चीन का है। पांचवां स्थान थाइलैंड का है।

एक बात और दोस्तो, आज तो हर आदमी को गन्ने चीनी और गुड़ की मिठास मिल रही है, लेकिन एक जमाना था, जब केवल राजा-महराजा और रईस लोग ही मुंह मीठा कर सकते थे। पंद्रहवीं सदी में यूरोप के रईस लोग चीनी और कैंडी सुंदर डिब्बों में सहेजकर रखते थे। और उसे खास मेहमानों और दोस्तों को ही पेश करते थे।

जानते हो, यह कैंडी क्या है? हम जिसे खांड कहते हैं, वहां अंग्रेजी में खांड से खेंड और फिर कैंडी हो गई! और, अंग्रेजों की शुगर भी तो हमारी शर्करा से ही बनी। फारसी में शर्करा 'शकर' हो गई और प्राचीन लैटिन भाषा में 'सैकरम'। यूनानी लोग इसे 'सकरॉन' कहते थे। मतलब यह कि पूरी दुनिया में मिठास है, तो गन्ने की शर्करा से ही है। फिर चाहे उसे 'शुगर' कहो या 'चीनी' या 'गुड़'। हमारा तो गन्ना जिंदाबाद है। ❀

Sukhwant Kalsi's मूर्खिस्तान सुखवंत

New Year Fultu-Panti

जाड़ा आया

अपने लेखक को जानिए

गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल' : बीसीयों पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। साझा संकलनों में कविताएं और कहानियां प्रकाशित। अभी बलरामपुर, (उत्तर प्रदेश) में कर अधिकारी

जाड़ा आया
बोला, "भाई!
अब राजा हूँ मैं।
गर्मी! गद्दी छोड़ो!
ऋतुओं का
नेता हूँ मैं।।

पाला ओस धुंध ये सारे
हैं मेरे सैनिक।
अब मेरे आदेश चलेंगे
नित्य यहाँ दैनिक।।
ऋतुओं में सबसे सुन्दर
सबसे अच्छा हूँ मैं!

मैं आता तो खुश हो जातीं
खेतों की फसलें।
मैं देरी कर दूँ आने में
लोग शीश पकड़ें।।
रबी-फ़सल के लिए देवता
के जैसा हूँ मैं!

मैं ना होता तुमको कैसे
लगती भली रजाई?
मैं ना होता कैसे कहते
धूप बड़ी मन-भाई?
अगर गौर से सोचो सच में
एक मज़ा हूँ मैं!"

मुझको सर्दी नहीं भाती है

सुबह-सवेरे दाँत बज रहे
इतनी जल्दी आठ बज रहे
होमवर्क को पेंसिल पकरूँ
हाथों से छूट जाती है
तोशक , तकिया और रजाई
मुझको यही लुभाती है
मम्मी अब कनटोप निकालो
मुझको सर्दी नहीं भाती है

सूरज चाचा लेट हो रहे
देखो छत पर आने में
आसमान भी जुटा हुआ है
शायद उन्हें मनाने में
धीमें भी जो चली हवा तो
कानों को सहलाती है
मम्मी अब कनटोप निकालो
सर्दी मुझको नहीं भाती है

चहुँ ओर है घना कुहासा
आँखें धोखा खा जाती है
सड़कों पर चलती गाड़ी
पल में ओझल हो जाती है
है स्वेटर, जूते और जुराबें
फिर भी ठंडी लग जाती है
मम्मी अब कनटोप निकालो
सर्दी मुझको नहीं भाती है

अपने लेखक को जानिए

अमित कुमार अम्बष्ट : हाजीपुर (बिहार) में जन्म, प्रबंधन में स्नातकोत्तर, प्रकाशित कृतियां : खुशियों का ठोंगा (काव्य संग्रह) एवं छः साझा काव्य संग्रह। स्तरीय पत्रिकाओं में नियमित रूप प्रकाशन ।

सच्ची दोस्ती

एक रंग-बिरंगी पतंग थी, जिसका नाम चुनमुन था। एक पतंग को बांधने वाली डोरी, जिसका नाम मांझा था। चुनमुन रोमिल के घर के स्टोर में चुपचाप एक कोने में पड़ी हुई थी और मांझा भी चरखी में लिपटा हुआ सुस्ता रहा था।

"पता नहीं कब मकर संक्राति आएगी और रोमिल मुझे खुले आसमान में उड़ाएगा।" चुनमुन बोली।

"तू अकेली थोड़े न उड़ सकती है, मैं ही तो ले जाऊंगा तुझे खुले आसमान में।" मांझा अपनी सुस्ती भगाता हुआ बोला।

"बस, यही बात मुझे अच्छी नहीं लगती, तू हर जगह मेरे पीछे-पीछे आ जाता है।"

"मैं तेरी रक्षा करता हूं। दूसरी पतंगों से कटने से तुझे बचाता हूं।" मांझे ने कहा।

"तू क्या बचाएगा मुझे। तू तो खुद ही कट जाता है।" चुनमुन बोली।

"ऐसे मत बोल चुनमुन, हमारी दोस्ती बचपन की है।" मांझे ने समझाने की कोशिश की।

"तू मुझे अपना दोस्त मत बोल। मैं इतनी रंग-बिरंगी सुंदर सी, तू बदरंग सा।" चुनमुन ने अकड़कर कहा, "तू मेरा दोस्त कभी नहीं बन सकता, पिछलग्गू कहीं का।"

मांझा को बुरा तो बहुत लगा, पर वह बात बढ़ाना नहीं चाहता था। इसलिए चुप हो गया। दरअसल चुनमुन को अपनी खूबसूरती का बहुत घमंड हो गया था। वह उससे दोस्ती मजबूरीवश रखे हुए थी।

मकर संक्राति आ गई। रोमिल स्टोर में आया। पतंग और चरखी उठाकर मैदान में पतंग उड़ाने चला गया। उसने चुनमुन को मांझे से बांधा। मजबूरी में चुनमुन बंध गई।

अब रोमिल के दोस्त ने पतंग को दोनों हाथों से पकड़कर हवा में उछाला और रोमिल मांझे को झटका देकर पतंग को उड़ाने लगा। थोड़ी ही देर में चुनमुन हवा में उड़ने लगी। हरी, पीली, गुलाबी रंगों वाली चुनमुन आसमान में खूब ऊंची उड़ रही थी। रोमिल अभी तक अपनी पतंग से कई पतंगे काट चुका था। इसलिए चुनमुन को और गुमान हो गया था।

"देखा, मैने अभी तक तीन पतंगें काट दी। मुझे कोई नहीं काट पाया।"

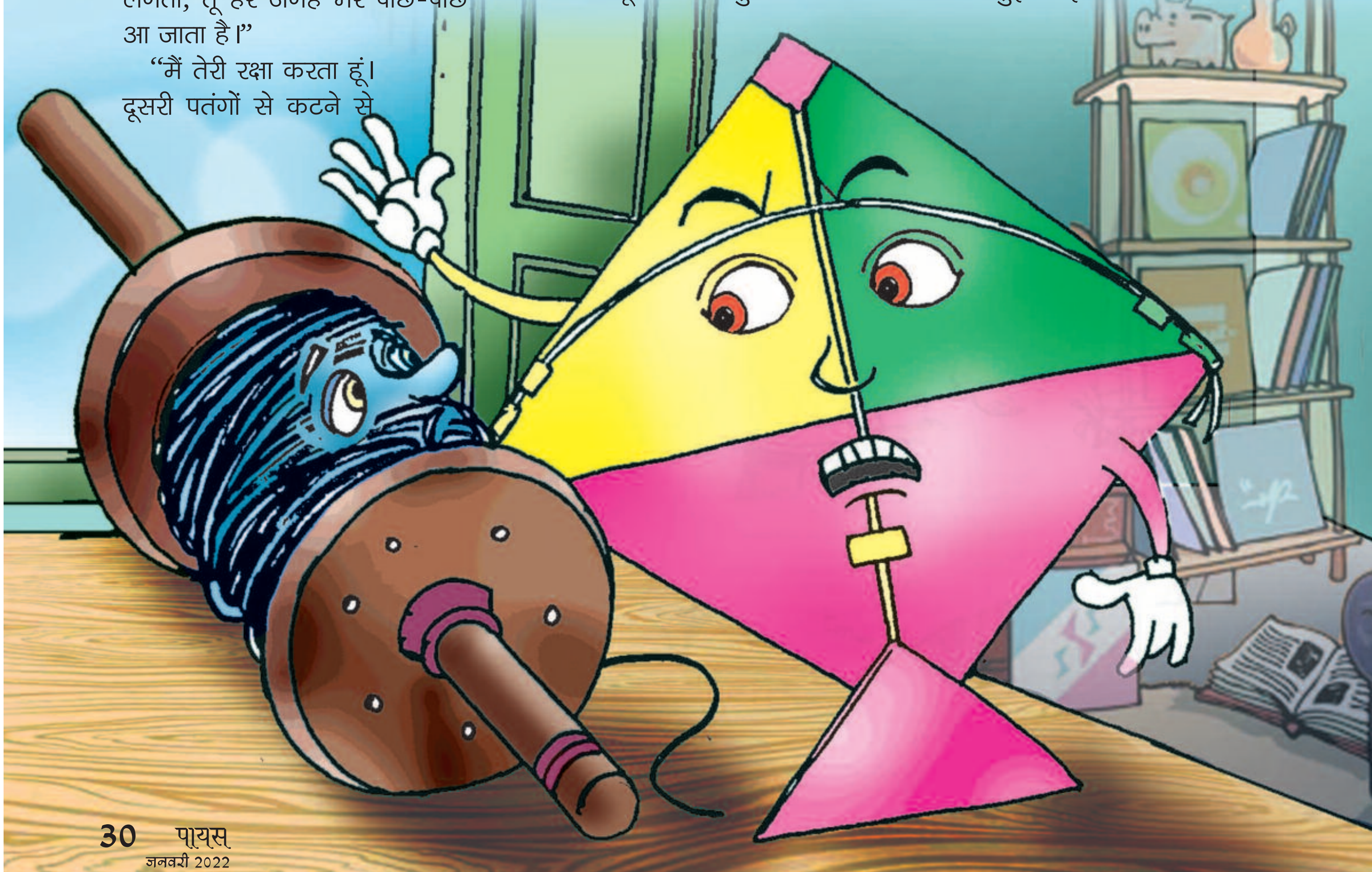

चुनमुन अकड़ते हुए बोली।

"लेकिन पतंग तो मैंने काटी है।" मांझे से चुप न रहा गया।

"तू चुप कर। जबरदस्ती अपनी तारीफ करने लगता है।" चुनमुन उसे डपटते हुए बोली।

मांझा सबके सामने झगड़ा नहीं करना चाहता था, इसलिए चुप हो गया। चुनमुन अपने आसपास उड़ रही सभी पतंगों को बहुत पीछे छोड़ चुकी थी।

"बस कर चुनमुन, अब कितना ऊंचा उड़ेगी। अब हमें लौट जाना चाहिए। रोमिल भैया भी मुझे वापस खींच रहे है।" मांझे ने समझाया।

"रोमिल के गुलाम, तुझे वापस जाना है, तो जा। मैं तो आज जी भरकर उड़ूंगी।" चुनमुन ने वापस लौटने से इनकार कर दिया।

परेशान रोमिल ने मांझे को कसकर खींचा, तो वह टूट गया। मांझा डर गया लेकिन चुनमुन को लगा कि उसे आजादी मिल गई है। हवा में इठलाती हुई वह आसमान में उड़ चली। थोड़ी दूर पर उसे दो बादल मिले। रूपा और देवा।

"अरे वाह! तुम तो बहुत सुंदर हो। तुम्हारा नाम क्या है?" रूपा ने पूछा।

"चुनमुन।" अपनी तारीफ सुन चुनमुन इतराते हुए नाम बताया।

"तुम इतनी सुंदर हो लेकिन तुम्हारी ये पूंछ बहुत बदरंग है। या यह तुम्हारा दोस्त है जिसे घुमाने लाई हो?" कहकर देवा हंस पड़ा।

"अरे नहीं, कहां मैं इतनी सुंदर नाजुक सी और कहां ये बदरंग सा मांझा। भला ये मेरा दोस्त कैसे हो सकता है?" चुनमुन ने मुंह बनाया।

मांझे को बुरा लगा। पर वह चुनमुन के नए दोस्तों के सामने उसका अपमान नहीं करना चाहता था। इसलिए मन मसोसकर चुप रहा।

"तो तुम इसे छोड़ क्यों नहीं देती? हमारे साथ चलो, हम तुम्हें दुनिया की सैर करवाएंगे।" रूपा ने समझाया।

यह सुन चुनमुन ने मांझे से कहा कि वह वापस रोमिल के पास चला जाए। लेकिन मांझा नहीं माना। उसे चुनमुन की फिक्र थी। इसलिए वह जबरदस्ती साथ-साथ उड़ता रहा।

तभी रूपा और देवा गरजे गड़गड़-गड़गड़, गड़गड़-गड़गड़।

"अरे तुम लोग इतना गरज क्यों रहे हो?" चुनमुन ने पूछा। गड़गड़ाहट सुन वह घबरा गई थी।

"हम लोग पानी बरसाने की तैयारी कर रहे हैं।" रूपा ने बताया।

"पानी बरसाओगे, तो मैं तो भीग जाऊंगी।" चुनमुन चिंतित हो उठी।

"हां, यह तो है।" रूपा ने हामी भरी।

"तो फिर रुक जाओ, पानी मत बरसाओ।" चुनमुन ने अनुरोध किया।

"अगर हम पानी नहीं बरसाएंगे, तो बच्चे छपाई-छप्प नहीं खेल पाएंगे, किसान फसल नहीं बो पाएंगे, नदी-नाले सूख जाएंगे, तो मछलियां प्यासी मर जाएंगी।"

अब तो चुनमुन की हालत खराब हो गई। भीग जाने पर उसका गलकर फट जाना निश्चित था। वह फफक कर रोने लगी।

"चुनमुन, हिम्मत से काम लो। हम लोग जरूर सुरक्षित नीचे पहुंच जाएंगे।" तभी मांझे ने उसे हौसला बंधाया।

"क्या तुम मेरी मदद करोगे?" चुनमुन ने आश्चर्य से पूछा।

"बिलकुल करूंगा। हम तुम तो पुराने साथी हैं और एक दूसरे की मदद कर एक बार फिर हम नीचे पहुंच सकते हैं।" मांझे ने समझाया। फिर रूपा व देवा से बोला, "अगर तुम थोड़ी देर के लिए अपनी बरसात रोक लो, तो मैं चुनमुन को बचाने की कोशिश कर सकता हूं।"

दोनों बादल इसके लिए खुशी-खुशी मान गए।

"चुनमुन, तुम भी हवा के झोंकों के साथ जरा नीचे की ओर गोता लगाओ।" मांझे ने कहा।

यह सुन चुनमुन ने नीचे की ओर गोता लगाया। हवा ने भी उसकी मदद की, तो वह काफी नीचे आ गई।

थोड़ी दूर पर कुछ बच्चे खड़े थे। उन्हें देख मांझे ने कहा, "चुनमुन, एक गोता और लगाओ तो मैं खुद को इन बच्चों को पकड़ा दूंगा।"

चुनमुन ने सरसराते हुए एक लंबा गोता लगाया, तो वह काफी नीचे आ गई। मांझा उसके नीचे लटक रहा था। तभी एक बच्चे ने उछलकर मांझे को पकड़ लिया और अगले ही पल चुनमुन उसके हाथों में पहुंच गई।

"अरे वाह, तुम तो बहुत सुंदर हो और तुम्हारा मांझा भी बहुत शानदार है। मैं तुम दोनों को बहुत संभालकर रखूंगा" उस बच्चे ने कहा और खुशी से उछलते हुए अपने घर की ओर चल दिया।

नए दोस्त के मिल जाने से चुनमुन बहुत खुश थी। मांझे के लिए अपनत्व के भाव छलक रहे थे। उसने तय कर लिया था कि अब कभी शरारत नहीं करेगी और अपने दोस्तों का साथ निभाएगी। ❀

अपने लेखक को जानिए

सुधा जुगरान : 13 वर्ष की उम्र से लेखन की शुरुआत। विगत 27 वर्षों से राष्ट्रीय स्तर की साहित्यिक व गैर साहित्यिक अनेकों पत्रिकाओं में कहानियों, लेखों एवं समीक्षाओं सहित कुछ बाल-कहानियों भी प्रकाशित। दो कथा संग्रह प्रकाशित। आकाशवाणी देहरादून से कहानियों का प्रसारण व दूरदर्शन देहरादून केंद्र से परिचर्चा में कई बार शामिल।

किस्सा चालाक बिल्ली का

मणिपुर के जंगलों में एक विशेष पक्षी पाया जाता है जिसका नाम है पीबेट। एक बार की बात, एक पीबेट ने जंगल में एक पेड़ पर घोंसला बनाया हुआ था। उसमें उसके सात बच्चे थे।

पीबेट को इस बात की बड़ी चिंता रहती थी कि उसके बच्चे जल्दी-जल्दी उड़ना सीख लें, ताकि वे आजाद होकर अपना जीवन जी सकें। मां को उनकी देखभाल की चिंता न करनी पड़े। इसके साथ ही पीबेट मां की सबसे बड़ी चिंता यह थी कि कोई बिल्ली इन्हें खा न जाए। दुर्भाग्य से एक बिल्ली पास ही रहती थी, और वह थी भी बड़ी दुष्ट। साथ ही बड़ी ढीठ भी।

यह बिल्ली कुछ ज्यादा ही चालाकी कर रही थी। उसने पीबेट के सामने यह घोषणा कर दी थी कि उसने वैराग्य ले लिया है और अब वह मांस को हाथ भी नहीं लगाएगी।

पीबेट ने उसकी बात सुन तो ली, पर उसे बिल्ली मौसी की बातों पर यकीन बिल्कुल नहीं था। हालांकि बिल्ली मौसी ने पीबेट पर विश्वास जमाने के लिए भगवा कपड़े भी धारण कर लिए थे और उसके हाथ में रुद्राक्ष की माला भी रहने लगी थी। वह जब भी इधर-उधर जाती, तो मुंह से धीमे-धीमे स्वर में 'किंकरमाला किंकरमाला' गुनगुनाते हुए चलती।

'पता नहीं, यह किंकरमाला क्या बला है?' पीबेट मां सोचती, 'पर जो भी हो, इसकी आंखें तो मुझे शिकार खोजती जान पड़ती हैं। जैसे लालच टपक रहा हो। मुझे बच्चों को इससे बचाकर रखना चाहिए।'

एक बार बिल्ली मौसी पीबेट के पास आई। हंसते-हंसते बड़ी इठलाती हुई बोली, "मैं कैसी लग रही हूं, प्यारी पीबेट?"

चित्र : इंदिरा

सुनकर पीबेट को गुस्सा तो बहुत आया। पर उसके बच्चे अभी उड़ना नहीं सीख पाए थे। उसे चिंता थी कि अगर उसने बिल्ली के सामने सच-सच बोला, तो वह निश्चित रूप से उन्हें खा जाएगी। यही सब सोचकर पीबेट ने बिल्ली मौसी की खूब प्रशंसा करते हुए कहा, "अहा, बिल्ली मौसी, वाह! आपका तो कहना ही क्या है। आप इतनी खूबसूरत लग रही हैं कि मुझे समझ में नहीं आ रहा, यह बात आपको कैसे बताऊं? बस, यों समझ लीजिए, कि आप ऐसे लग रही हैं, जैसे पानी से लबालब भरा तालाब हो, या फिर बढ़िया धान से भरा आंगन। क्यों, मैं ठीक कह रही हूं न?"

प्रशंसा सुनकर बिल्ली मौसी और भी अकड़ गई थी। उसने अपने गले से बड़ी अजीब सी 'घुर्र-घुर्र' की आवाज निकाली। लग रहा था, घमंड उसके अंदर समा नहीं रहा।

उधर बेचारी पीबेट की चिंता और बढ़ गई। उसे लगा कि यह बिल्ली दुष्ट नहीं, दुष्ट की नानी है। इससे भी खराब बात यह कि वह उसके घर तक आ पहुंची है। अब तो इससे बचना बड़ा मुश्किल है। यह जरूर उसके बच्चों को खा जाएगी।

पीबेट के चेहरे पर एक रंग आ रहा था, एक जा रहा था। वह क्या करे, क्या न करे, सोचकर उसके दिल में बुरी तरह धुकधुकी हो रही थी।

बच्चे अभी छोटे थे। वह भला वह कितना उनका खयाल रख सकती थी? उसने आसमान की ओर देखकर कहा, "मेरे बच्चों का खयाल रखना। इस दुष्ट बिल्ली ने उन्हें जरूर बचाना।"

पता नहीं, आसमान ने उसकी बात सुनी या नहीं, पर तब तक उसे एक रास्ता सूझ गया था। उसने सोचा, अपने बच्चों को अब मुझे सब कुछ बता देना चाहिए।

आखिर कुछ सोचकर पीबेट ने अपने बच्चों को समझाया, "देखो बच्चो, यह बिल्ली बड़ी कपटी है, यह तुम्हें भकोसने के चक्कर में है, बस मौका ढूंढ़ रही है। तुम जल्दी से जल्दी उड़ना सीख लो, ताकि इस कपटी बिल्ली से तुम्हारे प्राण बच सकें।"

अब तो वह सुबह, दोपहर, शाम तीन-तीन बार उन्हें उड़ने का अभ्यास कराने लगी। बच्चे भी मां की चिंता समझ गए थे। इसलिए पूरी कोशिश कर रहे थे कि वे जल्दी से जल्दी उड़ना सीख लें।

जल्दी ही छह बच्चे तो अच्छी तरह उड़ना सीख गए, बस एक ही थोड़ा कमजोर रह गया था।

अब पीबेट ने फैसला कर लिया था कि वह कपटी बिल्ली की ज्यादा परवाह नहीं करेगी। अगर वह उससे दोबारा पूछेगी कि मैं कैसी लग रही हूं, तो वह उसे सच-सच बता देगी।

दो-तीन दिन बाद कपटी बिल्ली फिर पीबेट के पास आकर बोली, "पीबेट, पीबेट, जरा देखो तो, मैं कैसी लग रही हूं?"

पीबेट को गुस्सा आ रहा था कि बड़ी भली बनकर आई है यहां और अंदर ही अंदर मौका तलाशने आई है बच्चों को खाने का।

इसलिए उसने गुस्से में आकर कहा, "जैसी और बिल्लियां होती हैं, वैसी ही तुम भी हो। तुममें क्या सुरखाब के पर लगे हैं जो तुम औरों से ज्यादा खूबसूरत लगोगी?"

यह कहते हुए पीबेट ने अपने बच्चों को उड़ने का इशारा कर दिया।

बिल्ली को बहुत गुस्सा आया। कंठी माला छोड़, वह अपने असली रूप में आ गई और बच्चों पर झपट पड़ी। छह बच्चे तो तुरंत उड़ गए, पर एक उसकी पकड़ में आ गया।

अब तो पीबेट की हालत खराब थी। पर उसने तुरंत इस बच्चे को बचाने का तरीका सोच लिया था।

उसने बिल्ली से कहा, "देखो मौसी, तुमने वैराग्य धारण किया हुआ है। तुम्हें किसी भी चीज को बिना शुद्ध किए नहीं खाना चाहिए। इस बच्चे के पंखों पर धूल-मिट्टी जमी है और वे चिपचिपे हो रहे हैं। पहले उसे अच्छी तरह स्नान कराओ। फिर हथेली पर रखकर धूप में अच्छी तरह सुखाओ। ऐसा करते हुए उसे सात बार उलटना-पलटना, ताकि वह अच्छी तरह सूख जाए। फिर उसे खा लेना।"

बिल्ली ने ध्यान से पीबेट की बातों को सुना और वैसा ही करने लगी। उसने सोचा, 'लोग मुझे सयानी बिल्ली कहते हैं, तो आखिर मुझे थोड़ा सयानापन करना ही चाहिए न!'

जब सयानी बिल्ली सात बार बच्चे को धूप में पलट चुकी थी, तो वह पूरी तरह सूख गया। सूखते ही उसमें हिम्मत आ गई और वह फौरन पंख फैलाकर उड़ गया। पर उड़ते-उड़ते वह कपटी बिल्ली के पंजे पर बीट कर गया।

कपटी बिल्ली की खीज अब देखने लायक थी। ❁

अपने लेखक को जानिए

डॉ. सुनीता : बच्चों की जानी-मानी कथाकार। सर्व शिक्षा अभियान और सामाजिक कार्यों में गहरी रुचि। अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में गंभीर आलोचनात्मक लेख और बच्चों के लिए लिखी गई कहानियां, लेख वगैरह छपे हैं। बच्चों के लिए लिखी गई कई पुस्तकें बेहद चर्चित हैं।

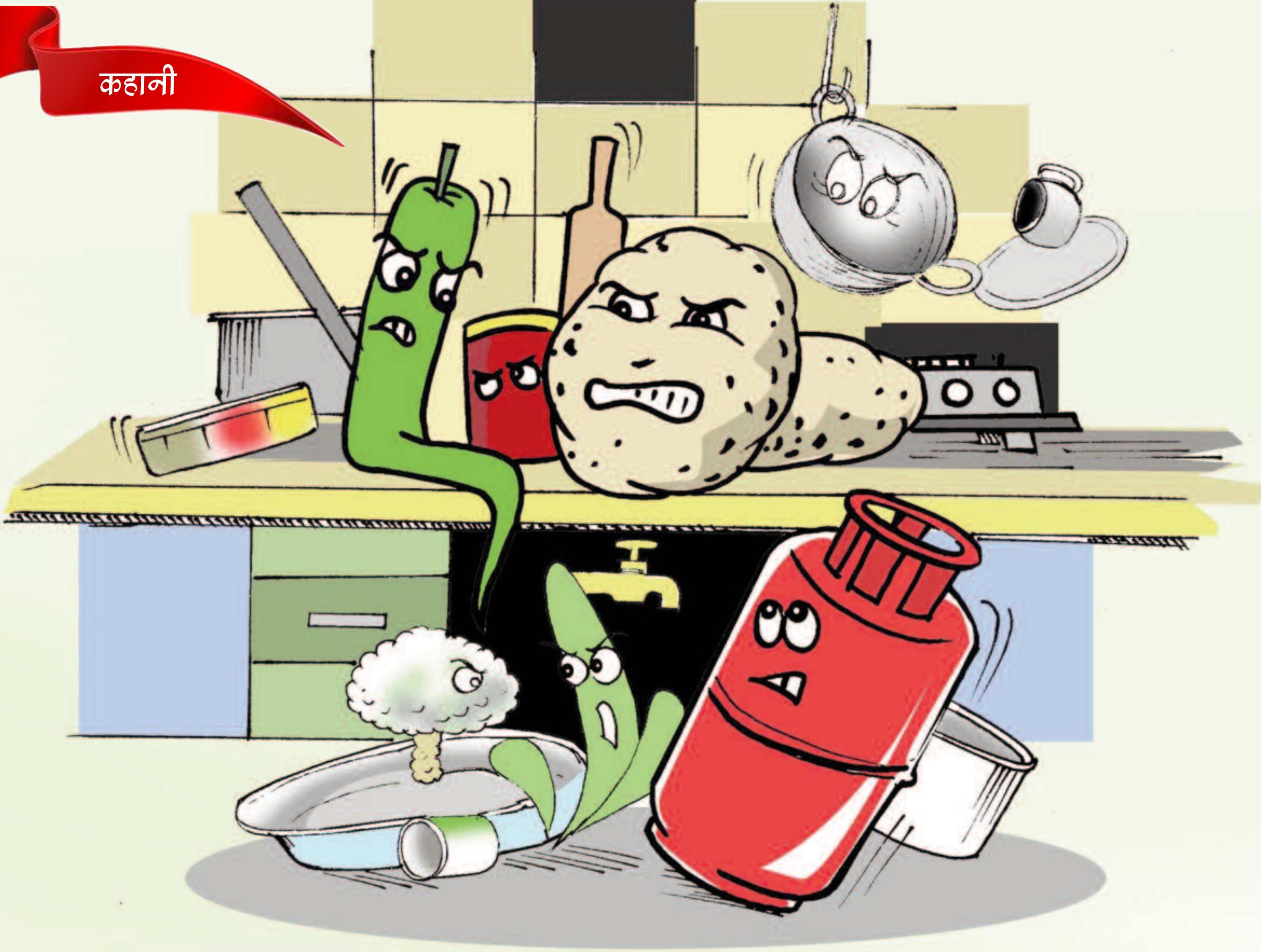

हुआ रसोई में हंगामा

आज रसोई का माहौल कुछ और ही था। इधर मालकिन ने बच्चों को दोपहर का खाना खिलाने के बाद रसोई का दरवाजा बंद किया, उधर छिड़ गई अपने को दूसरे से बड़ा सिद्ध करने की होड़ !

"मैं हूं कच्ची घानी, शुद्ध सरसों का तेल। किसी भी खाने में मेरे बिना काम ही नहीं चलता।"

तेल की बात पर प्याज कुछ यूं इतराई, "हुंह, इसका नाम तो कितना बुरा है-'कड़ुआ तेल'। मुझे देखो, मेरे बिना तो सब कुछ अधूरा है। सब्जी का असली मजा तो मुझसे है!"

"पर मुझे क्यों भूल रहे हो तुम लोग?" अचानक सभी ने पलटकर देखा तो टोकरी में लेटा लहसुन बुदबुदा रहा था। वह अपना सफेद कपड़ा उतारकर बाहर आ गया और बोला, "तुम सब अपनी बड़ाई पर लगे हुए हो, पर जानते नहीं कि मेरे सुगंधित तड़के के बिना दाल का मजा ही किरकिरा है!"

"और मेरे बिना?" तभी अदरख ने कहा, "मैं तो दवा हूं दवा! मैं खाने का स्वाद तो बढ़ाती ही हूं, चाय का भी स्वाद दोगुना कर देती हूं। ऐसी चाय को लोग चुस्कियां ले-लेकर पीते हैं।"

अब तब चुप बैठी पिसी हुई धनिया भी मैदान में आ गई, "मुझे समझ में नहीं आता कि जब सभी बड़े और महान बन जाएंगे, तो मुझे कौन पूछेगा? आखिर कोई भी मसाला मेरे बिना कैसे तैयार होगा?"

"मात्रा अधिक होने से क्या कोई

अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है?" अचानक हल्दी ने पलटवार किया, तो सभी हंस पड़े। उसने कहा, "मेरी तो बात ही निराली है।"

फिर वह नाजुक अंदाज में बोली, "शादी की रस्म में मेरे बिना तो काम ही नहीं चलता। दुल्हन का सौंदर्य मुझसे ही बढ़ता है! चाहे कुछ भी कर लो, टरमरिक क्रीम ही क्यों न बना लो, मैं हर जगह रहती हूं। और खाने के मामले में तो मैं अव्वल हूं। पकने के बाद सब्जी का सुनहरा रंग मेरे बिना अधूरा है।"

अब तक सबकी बातें चुपचाप सुन रही चटकीली लाल मिर्च बोल उठी- "भई, मैं तो हर सब्जी में सबसे कम रहती हूं। पर रहती हूं सब पर भारी।"

धनिया ने बुरा-सा मुंह बना लिया। मिर्च ने आगे कहा, "और अगर मैं न रहूं, तो क्या तुम लोगों से बनी सब्जी कोई छुएगा भी?"

उसकी बात में दम था। एक क्षण को सभी शांत हो गए। तभी तुरुप का पत्ता फेंकते हुए दूधिया नमक ने कहा, "चलो, अब सब अपने-अपने मुंह बंद कर लो!"

सभी चौंक उठे कि आखिर यह कौन आ गया?

नमक ने इतराते हुए कहा, "अब तुम्हीं बताओ, मेरे बिना खाने में मजा आएगा क्या?"

नमक की बात पर सभी के मुंह पर ताले लग गए। अब कोई कहे भी तो क्या कहे?

पर मर्तबान में रखा आम का अचार कम चालाक नहीं था। उसने तपाक से जवाब दिया, "और अगर तुम अधिक मात्रा में पड़ गए, तो क्या कोई खाना छुएगा?" उसने मस्ती में लहराते हुए कहा, "खाने का असली स्वाद तो मुझसे है। खाना कितना भी बे-स्वाद बना हो, पर मेरी जुगलबंदी से लोग एक-दो रोटी अधिक ही खा जाते हैं!"

"और मेरी चटनी तो वाह-वाह! क्या कहने!" हरी धनिया ने भी नहले पे दहला दे मारा।

अभी सभी बातें ही कर रहे थे कि किचन की ओर किसी के आने की आवाज सुनाई दी। सभी चुप हो गए। देखा, तो शाम का खाना बनाने के लिए मालकिन आ रही थीं। उन्होंने किचन खोला तो सभी चुप हो गए। पर अब भी कोई एक-दूसरे से छोटा नहीं होना चाहता था।

मालकिन ने हाथ धोकर ऐप्रन बांधा और छूरी लेकर कुछ तलाशने लगीं। उन्होंने नीचे रखी डलिया से कुछ आलू निकाले और छीलने लगीं। अब तक की सारी वार्ता के गवाह बने आलू ने सभी की ओर व्यंग्यात्मक दृष्टि से बुदबुदाते हुए कुछ कहा। सभी उसकी आंखों का इशारा समझ गए कि आखिर वह कहना क्या चाहता है? किचन का राजा तो आलू है, जिसके बिना सभी सब्जियां अधूरी हैं!

मालकिन ने आलुओं को काटा। फिर मसाले का पेस्ट बनाया और गैस जलाने लगीं। पर गैस तो जल ही नहीं रही थी। अब शुरू हुआ असली खेल! गैस ने जानबूझकर अपने को बंद कर लिया।

"लगता है, गैस ख़त्म हो गई है। हे भगवान! अब मैं क्या करूंगी?" मालकिन चिंतित हो उठीं, "आज तो घर पर कोई है भी नहीं।"

अब तक कटारी में रखे मसाले कुढ़ने लगे। उन्हें एक साथ रहते हुए काफी देर हो गई थी और खुजली होने लगी। उन्हें एक-दूसरे का साथ बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था।

मालकिन ने फिर से बर्नर को हिलाया-डुलाया, तो गैस जल उठी। उन्होंने चैन की सांस ली।

आज मसालों को गैस का महत्त्व भी समझ में आ गया था।

पर अब भी कोई हार माननेवाला नहीं था। अगर गैस ने अपने को बड़ा साबित करने की कोशिश की थी, तो चिमटा, चकला, बेलन और तवा भी किसी से कम नहीं थे।

पर इससे पहले उनमें कोई बहस छिड़ती, कड़ाही बोल उठी, "मेरी ओर तो कोई ध्यान ही नहीं दे रहा! अगर मैं न रहूं, तो सब्जी बनेगी किसमें?" उसने भावुक होते हुए कहा, "पर मुझे अपने को किसी से बड़ा साबित करने की चाह नहीं है। मेरा जो भी महत्त्व है, मैं उसी में खुश हूं।" कहती हुई कड़ाही गर्म होने लगी।

मालकिन ने तेल गरम करने के बाद उसमें प्याज ब्राउन किया और जैसे ही मसाला डाला कि 'छन्न' की आवाज के साथ सभी फिर से लड़ने लगे।

पर चूल्हा तो अब तक कुछ बोला ही नहीं था, वह तो बस हंस रहा था कि अब वह क्या कहे! ❀

अपने लेखक को जानिए

डॉ. मोहम्मद साजिद खान : कॉलेज में अध्यापन के साथ-साथ लेखन भी। देश की लगभग सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में विगत 28 वर्षों से सक्रिय लेखन, कहानी, कविता, चित्र-पहेली, एकांकी, लघुकथा, साक्षात्कार, संस्मरण, समीक्षा, आदि की अब तक लगभग 600 रचनाएं प्रकाशित।

शेरू बदल गया

शेर महाराज, शेरनी रानी के आकस्मिक निधन के पश्चात गुमसुम से रहने लगे थे। राजपाट में भी अब उनका मन नहीं लगता था

उनके दोनों बच्चे यह जंगल छोड़कर विदेश के किसी जंगल में ही बस गए थे। शेरनी रानी के बिछुड़ने का गम तो उन्हें था ही, मगर अब उनके लिए एक और विपत्ति खड़ी हो गई थी।

दूर जंगल में रहने वाला उनका भतीजा शेरू मां-बाप की मृत्यु के पश्चात उनके पास चला आया था। शेरू अव्वल दर्जे का बिगड़ा हुआ बच्चा था। आदर तथा विनम्रता से बात करना तो शायद किसी ने उसे सिखाया ही नहीं था। वह तो हर समय झगड़ा करने को तैयार रहता था। वह दिन भर खाता पीता रहता तथा आराम से लेटा रहता। शारीरिक श्रम ना करने के कारण उसका भार बहुत बढ़ गया था। इसलिए वह ज्यादा भागदौड़ नहीं कर पाता था।

जब से शेरू वहां आया था, तब से उसने शेर महाराज की नाक में दम कर रखा था कि बुढ़ापे के कारण अब वह राज्य की ढंग से देखभाल नहीं कर पा रहे हैं। इसलिए उन्हें अब सारा राजपाट उसे सौंप देना चाहिए। लेकिन महाराज शेर उसे राजपाट सौंपकर राज्य का सत्यानाश नहीं करना चाहते थे।

मगर शेरू भी अपनी जिदद पर अड़ा हुआ था। अब तो वह प्रतिदिन ही महाराज शेर से झगड़ा करने लगा था। एक दो बार उसने महाराज पर हमला कर दिया था।

इसलिए अब शेर महाराज को यह डर भी सताने लगा था कि कहीं शेरू उन्हें जान से ही मार ना डाले।

आखिरकार उससे परेशान होकर एक दिन शेर महाराज जंगल छोड़कर कहीं चले गए। किसी को भी मालूम ना था कि वह कहां चले गए थे।

जंगल वासियों को जंगल में रहने वाले महाराज के एक बुजुर्ग मित्र से इतना ही पता चल पाया था कि

चित्र : इंदिरा

महाराज शेरू के व्यवहार से तंग आकर इस जंगल को सदा के लिए छोड़कर हिमाचल पर्वत की ओर कूच कर गए थे, ताकि बाकी का जीवन वह आराम से गुजार सकें।

उनके जाने के पश्चात अब शेरू स्वयं ही जंगल का राजा बन गया था। सबसे पहले उसने अपनी गुफा बदल ली थी। महाराज शेर की गुफा ऊंचाई पर थी। मोटापे के कारण शेरू को वहां आने-जाने में कठिनाई होती थी। इसलिए उसने जमीन के स्तर से थोड़ा नीचे गुफा का निर्माण करवा लिया था। पास में ही थोड़ी ऊंचाई पर एक झोंपड़ी-सी बनवा ली थी जहां वह कभी-कभार परियादी जानवरों से मिला करता था।

वह दिन भर तो अपनी गुफा में ही लेटा रहता। मगर रात को अंधेरा होने पर किसी जंगली जीव को मारकर खा जाता और अगर कोई सामान ले जाते हुए मिलता, तो उसका सामान तथा नकदी छीन लिया करता। कोई थोड़ा बहुत अकड़ता अथवा आनाकानी करता, तो शेरू बुरी तरह उसकी पिटाई कर देता।

सारे जंगल में उसके अत्याचार से त्राहि-त्राहि मच गई थी, मगर फिर भी उसके विरुद्ध आवाज उठाने का साहस किसी में न था।

जंगल वासी जब उसके पास फरियाद लेकर जाते, तो उन्हें डांट फटकार कर भगा दिया करता।

एक बार खेलते समय जिराफ के बेटे लालू की टांग में चोट लग गई थी। कोई नुकीली वस्तु उसकी टांग में घुस गई थी। तुरंत शहर जाकर ऑपरेशन द्वारा ही उसे निकाला जा सकता था। मगर जिराफ के पास इतने पैसे ना थे। वह असमंजस में पड़ गया था कि वह कैसे लालू का अस्पताल में उपचार करवाएं। इसलिए वह कुछ जंगल वासियों को साथ लेकर शेरू से निवेदन करने चला आया था कि राजकीय कोष से उसके बेटे लालू के ऑपरेशन के लिए सहायता प्रदान कर दी जाए।

मगर शेरू ने सहायता तो क्या करनी थी, उलटा सभी को डांट दिया था, " यहां आकर क्यों अपना समय बर्बाद कर रहे हो। जाकर अपना अपना काम क्यों नहीं करते।"

पल भर बाद उसने क्रोध भरे स्वर में कहा था, " लालू जिराफ को किसने खेलकूद में भाग लेने के लिए कहा था। मैंने तो कभी नहीं कहा। जब अपनी मर्जी से पंगा लिया है, तो अब स्वयं ही भुगते।"

और सभी फरियादी लज्जित होकर उदास मन से लौट आये थे। बाद में जंगल वासियों ने पैसे जमाकर उसका उपचार करवाया था।

इसी प्रकार जब भी कोई जंगलवासी शेरू से सहायता मांगने जाता, तो वह उसकी सहायता करना तो दूर की बात होती, उसे बुरी तरह फटकार दिया करता।

कुछ समय पश्चात उसने एक नया कानून बनाकर लोगों से प्रतिदिन उसके खाने-पीने का प्रबंध करने का आदेश दे दिया था। जंगली जानवर मारे डर के ऐसा करने पर विवश हो गए थे तथा बारी-बारी उसके खान-पान का प्रबंध करने लगे थे। मगर जो भी उसका कहना नहीं मानता था, उसको वह कठोर दंड देता था।

एक बार जंगल में जोरों की बारिश होने लगी थी। दो दिन लगातार बारिश होती रही। सभी ओर पानी भर गया था। चूंकि शेरू की गुफा नीचे स्थान पर थी इसलिए उसमें भी पानी भर गया था।

रात भर शेरू को गुफा से बाहर झोंपड़ी में रात गुजारनी पड़ी थी। दो दिन से उसे खाने के लिए कुछ भी ना मिला था। जो थोड़ा-बहुत गुफा में खाने के लिए रखा था, वह भी वहां

अपने लेखक को जानिए

डॉ.फकीर चंद शुक्ला : अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक तथा साहित्यकार। हिंदी तथा पंजाबी भाषा में इनकी 60 पुस्तकें प्रकाशित। विभिन्न राज्यों के 16 राज्य पुरस्कारों से सम्मानित। डॉ. शुक्ला का नाम 'वर्ल्डज हूज हू' अर्थात दुनिया की नामी गिरामी हस्तियों में सम्मिलित। हिन्दी तथा पंजाबी बाल साहित्य के लिए नेशनल अवार्ड से सम्मानित ।

गुफा में पानी भर जाने के कारण नष्ट हो गया था।

उसे बुरी तरह भूख सताने लगी थी। इसलिए बारिश थमते ही वह जंगल वासियों के घरों की ओर निकल पड़ा था।

सबसे पहले उसने लोमड़ी का दरवाजा खटखटाया, " लोमड़ी बहन मुझे बहुत जोर से भूख लगी है। कुछ खाने को दे दे।"

मगर लोमड़ी ने दरवाजा नहीं खोला। भीतर से ही मरियल-सी आवाज में बोली, " मुझे तो तीन दिन से बुखार है। बिस्तर से उठा भी नहीं जाता।"

लेकिन फिर भी शेरू दरवाजा खटखटाता रहा। आखिरकार जब लोमड़ी ने दरवाजा नहीं खोला तो वह मायूस होकर आगे बढ़ गया।

अब वह खरगोश के घर का दरवाजा खटखटाने लगा तथा रोब से बोला, " जल्दी दरवाजा खोल। मुझे भूख लगी है।"

मगर खरगोश ने तुरंत आवाज बदल कर कहा, " मम्मी तो काम पर गई है। बाहर से दरवाजा बंद कर गई है।"

शेरू के बार-बार दरवाजा खटखटाने तथा रौब डालने का उस

पर कोई असर नहीं हुआ।

इसी प्रकार शेरू कई जंगल वासियों के यहां गया। मगर किसी ने भी उसे किवाड़ नहीं खोलें।

वह गुस्से से तिलमिलाते हुए जा रहा था। तभी उसकी नजर दबंग हाथी पर पड़ी जो ब्गन्ना चबा रहा था।

उस पर नजर पड़ते ही शेरू चिल्लाकर बोला, “ जल्दी गन्ना दो। मुझे भूख लगी है।”

मगर दबंग हाथी कुछ नहीं बोला। चुपचाप गन्ना चबाता रहा।

शेरू का धैर्य मानो जवाब दे रहा था। वह क्रोध से तिलमिलाते हुए पूरे जोर से हाथी के बाड़े का बांस से बना दरवाजा तोड़कर भीतर चला आया तथा चिल्लाकर बोला, “ तुम्हें सुनाई नहीं देता। कब से चिल्ला रहा हूं। बहरे हो क्या ?”

लेकिन हाथी आराम से अपना गन्ना चबाता रहा।

दबंग हाथी के इस व्यवहार ने मानो आग में घी का काम किया। मारे क्रोध के शेरू का अपने आप पर नियंत्रण ना रहा। उसने पास ही पड़ा एक मोटा-सा बांस उठाकर जोर से हाथी की पीठ पर दे मारा, “सुनाई नहीं देता, मैं क्या बोल रहा हूं।”

हाथी ने गर्दन घुमा कर उसकी ओर देखा और फिर आंखें तरेरते हुए उठ खड़ा हुआ। उसने उठते ही शेरु को सूंड में लपेट लिया तथा पूरे जोर से घुमाकर बाहर की ओर फेंक दिया।

शेरू जहां गिरा, वहां बड़े-बड़े पत्थर पड़े थे। गिरते ही शेरु का सिर फट गया तथा खून बहने लगा। शरीर पर भी कई जगह चोटें आईं।

वह कराहता हुआ उठा। कुछ पल इधर-उधर देखा और फिर लड़खड़ाता हुआ डॉक्टर बंदर की क्लीनिक पर जा पहुंचा और ना चाहते हुए भी अपने साथ घटित सारी घटना डॉक्टर को कह सुनाई।

डॉक्टर उसके व्यवहार से अच्छी तरह परिचित था। मगर फिर भी उसने अपना डॉक्टरी का धर्म निभाते हुए उसके सिर पर टांके लगा दिए तथा शेष घावों पर मरहम पट्‌टी कर दी।

शेरू के पास डॉक्टर को फीस देने के लिए पैसे भी नहीं थे। वह बहुत शर्मिंदगी अनुभव कर रहा था। उसने डॉक्टर बंदर से बाद में फीस देने को कहा ,तो उसने फीस लेने से मना कर दिया और प्यार से उसे समझाने लगा, “ तुम ताकत के बल पर लोगों को अपने वश में नहीं कर सकते। उनसे प्यार तथा विनम्रता से मेलजोल बढ़ाओ। उनके दुख-सुख में उनकी सहायता करो। अच्छे कार्यो से उनका मन जीतने का प्रयास करो।”

अब तक तो शेरु को भी समझ आ गई थी । डॉक्टर बंदर की बातों ने उस पर अच्छा प्रभाव डाला था। उसे मन ही मन अपनी ज्यादतियों पर अफसोस होने लगा था ।

और अब दिन-ब-दिन उसके व्यवहार में परिवर्तन आने लगा था ।

उसके व्यवहार में सुधार आने से अब जंगल वासी भी उससे प्रसन्न रहने लगे थे। ❀

अपने भीतर के लेखक को उड़ने के लिए खुला आसमान दें

◆ अपनी रचना को दूसरों के सामने लाने के लिए, अपनी कहानी, कविता या लेख को पी.डी एफ. फार्मेट में किताब या पत्रिका के रूप में दुनिया के सामने लाएं।

◆ आप केवल लिखें। बाकी सब हम पर छोड़ दें।

◆ ब्लैक एंड ह्वाइट या रंगीन चित्र भी बनवाने की सुविधा है।

◆ संपादन में 25 वर्षों का अनुभव

संपर्क करें

अनिल जायसवाल
9810556533 7982014609
akjaiswal2592@gmail.com

ANIL JAISWAL
Jais Features
akjaiswal2592@gmail.com
9810556533
7982014609

हिंदी में किसी भी प्रकार की, खास तौर पर बच्चों के लिए प्रकाशन सामग्री या कार्य के लिए संपर्क करें. प्रूफ रीडिंग, संपादन, संकलन, टाइपिंग, मैगजीन सेटिंग, डिजाइनिंग, पी.डी. फार्मेट में पत्रिका या ई. पत्रिका निकालने की सुविधा भी उपलब्ध है.

नंदन बाल पत्रिका में संपादन का 25 वर्षों का अनुभव

कछुआ

दुनिया में कुछ जानवर ऐसे हैं, जिन्हें बच्चा कहानी के माध्यम से तुरंत पहचान लेता है। इन कहानियों में से तीन कहानियां 'कौआ का कंकड़ भरकर मटके से पानी पीना', 'खरगोश और शेर की कुएं में परछाईं वाली' और 'कछुए और खरगोश की दौड़' वाली कहानियां अमर हैं।

खरगोश को मात देने वाला कछुआ, एक सरीसृप हैं। यह कुछ उन प्राणियों में से एक हैं, जो जल और जमीन दोनों पर पाए जाते हैं और दोनों जगह रह लेते हैं।

कछुओं की प्रजातियां कम से कम आंशिक रूप से जलीय हैं। उनके पास शिकार और अन्य खतरों से बचने के लिए एक खोल होता है। कछुओं का यह खोल आमतौर पर बहुत कठोर होता है। खतरा भांपकर वे अपनी गर्दन और सिर को सीधे पीछे की ओर ले जाते हैं और खोल में बंद सा कर लेते हैं ताकि अपनी रक्षा कर सकें।

कछुआ का आकार निश्चित नहीं है। वे जगह के अनुसार आकार में भिन्न होते हैं, जैसे गैलापागोस विशाल कछुआ, लंबाई में 1.2 मीटर तक होते हैं, तो स्पेकल्ड केप कछुआ केवल 6-8 सेमी लंबे होते हैं। कई कछुओं की प्रजाति में 100 किलोग्राम से अधिक आकार के कछुए पाए जाते हैं, जिनमें गैलापागोस और एल्डबरा विशाल कछुए शामिल हैं।

कछुआ दुनिया में सबसे लंबे समय तक जीवित रहने वाले जानवर हैं। गैलापागोस कछुओं को 150 से अधिक वर्षों तक जीवित रहने के लिए जाना जाता है, लेकिन एल्डबरा विशाल कछुआ अनुमानित 255 वर्षों तक जीवित रहा। फिर भी सामान्य तौर पर, अधिकांश कछुओं की प्रजातियां 80-150 साल तक जीवित रह सकती हैं।

कछुए शांत और बहुत धीमी गति से चलने वाले होते हैं, जिनकी औसत चलने की गति आधा किमी प्रति घंटा होती है।

कछुओं की अधिकांश प्रजातियों में मादा कछुआ 20 से अधिक अंडे देती हैं। अंडे देना आमतौर पर रात में होता है, जिसके बाद कछुआ अपने क्लच को रेत, मिट्टी और जैविक सामग्री से ढक लेता है। अंडों को छोड़ दिया जाता है। बच्चों के निकलने में 60 से 120 दिनों तक का समय लगता है।

अवधि के पूरा होने पर, बच्चा अपने खोल से बाहर निकलने के लिए अंडे को काटकर घोंसले की सतह तक खुदाई करता है और अपने आप को जीवित रखने की कोशिश करता है।

किशोर कछुओं को अक्सर वयस्कों की तुलना में पोषक तत्वों के एक अलग संतुलन की आवश्यकता होती है,

कुछ प्रजातियों में, पुरुषों के पास अपनी मादा समकक्षों की तुलना में लंबी, अधिक उभरी हुई गर्दन की प्लेट होती है, जबकि अन्य में,

मादाओं पर पंजे लंबे होते हैं। कछुए के लिंग का निर्धारण करने का सबसे आसान तरीका पूंछ को देखना है। मादा छोटी पूंछ होती है और नीचे गिरती है, जबकि पुरुषों की पूंछ बहुत लंबी होती है जो आमतौर पर ऊपर की ओर खींची होती है और पीछे के खोल की तरफ होती है।

अगर दिमाग की बात करें, तो कछुए का दिमाग बेहद छोटा होता है। मध्य और दक्षिण अमेरिका के लाल-पैर वाले कछुओं के मस्तिष्क में हिप्पोकैम्पस नामक एक क्षेत्र नहीं होता है, जो भावना, सीखने, स्मृति और स्थानीय नेविगेशन से संबंधित होता है।

कछुए दक्षिणी उत्तरी अमेरिका से दक्षिणी दक्षिण अमेरिका तक, भूमध्यसागरीय बेसिन के आसपास, यूरेशिया से दक्षिण पूर्व एशिया तक, उप-सहारा अफ्रीका, मेडागास्कर और कुछ प्रशांत द्वीपों में पाए जाते हैं। वे ऑस्ट्रेलिया में नहीं होते। वे विभिन्न आवासों में रहते हैं, जिनमें रेगिस्तान, शुष्क घास के मैदान, और गीले सदाबहार जंगलों और समुद्र तल से लेकर पहाड़ों तक की झाड़ियां शामिल हैं। कई बड़े द्वीपों में विशाल कछुओं की प्रजातियां हैं। इसका एक कारण यह भी है कि कछुए समुद्री फैलाव में बहुत अच्छे होते हैं। तैरने में असमर्थ होने के बावजूद, कछुए समुद्र में बहते हुए लंबे समय तक जीवित रहने में सक्षम हैं क्योंकि वे बिना भोजन या ताजे पानी के महीनों तक जीवित रह सकते हैं।

कछुए आमतौर पर सख्त शाकाहारी माने जाते हैं; जो घास, पत्तेदार साग, फूल और कुछ फलों को खाते हैं। हालांकि, कई अवसर पर उन्हें पक्षियों का शिकार और भोजन करते देखा गया है। कुछ प्रजातियां अपने सामान्य आवास में कीड़े का सेवन करती हैं। ❀

अनोखा तट गहिरमाथा

गहिरमाथा ओडिशा का एकमात्र समुद्री वन्यजीव अभयारण्य है। यह क्षेत्र केंद्रपाड़ा के राजस्व जिले के भीतर आता है।

ओलिव रिडले समुद्री कछुओं के कारण ओडिसा का यह गहिरमाथा तट दुनिया भर में प्रसिद्ध है। रिडले समुद्री कछुए हर साल यहां लाखों की संख्या मे आकर अंडे देते हैं। इन कछुओं का सामूहिक जन्म और पानी की तरफ लाखों की संख्या में एक साथ जाने का दृश्य दुनिया भर के वैज्ञानिकों और प्रकृति प्रेमियों दोनों को रोमांचित करता है।

ओलिव रिडले समुद्री कछुए हर साल नवंबर की शुरुआत से ओडिशा के इस तट पर बड़ी संख्या में प्रवास करते हैं। गहिरमाथा तट पर हर साल एक लाख से पांच लाख के बीच कछुए पैदा होते हैं।

प्रवासी समुद्री कछुओं को यह तट बहुत पसंद है। वे हजारों किलोमीटर की दूरी तय कर यहां आते हैं। यह देखा गया है कि ओलिव रिडले समुद्री कछुए हिंद महासागर में श्रीलंका के तटीय जल से उत्तर में गहिरमाथा के तटीय जल की ओर पलायन करते हैं।

फूल वाली लड़की

सर्दी का दिन बड़ा लुभावना लग रहा था। पूरब दिशा से सूरज सुनहरी रोशनी लिए धरती पर उतरता आ रहा था।

एक लड़की अपने चचेरे भाई अनंत के साथ सड़क के किनारे फूल बेच रही थी। आती-जाती गाड़ियों के शोरगुल में भी वह पद यात्रियों को ध्यान से देखती। थोड़ा भी कोई उसके फूल की ओर देखता, तो वह, "बाबू जी! बहन जी, फूल एकदम ताजे हैं। ले लो न!" कहते हुए दौड़ पड़ती। जब तक लड़की फूलों को बढ़ाती, अनंत अपनी मालाएं ग्राहक को थमा देता। निराशा में वह अपनी छोटी-छोटी आंखों से जाते हुए यात्रियों को बहुत दूर तक देखती रहती और मन मारकर फूलों पर पानी छींटने लगती।

जब से लड़की की मां बीमार हुई थी, वह मन लगाकर फूल बेच रही थी। भले उसकी तकनीक बचपने से भरी थी। पर लड़की का उत्साह कम न होता था। बहुत मेहनत के बाद भी नतीजा उतना अच्छा नहीं निकला, जितना उसने सोचा था। उसे बुरा तो बहुत लगता, लेकिन वह कर भी क्या सकती थी, सो कमजोर भावना को परे धकेलकर काम में जुटी थी। बहुत तरकीबों के बाद भी जब फूल नहीं बिके, तो टोकरी उठाकर वह घर लौट गई। बेटी को परेशान देख मां ने पूछा,"का हो मुनिया, तोहार मुंह इत्ता काहे लटका है?"

"माई, आजकल कोई फूल ही नहीं खरीदता। अपने लिए मोबाइल कैसे खरीद पाऊंगी? बड़ी अम्मा का बेटा अनंत बहुत चालू है। मेरे ग्राहक को अपने फूल बेच देता है।" कहते हुए लड़की फफक पड़ी।

बिटिया की बात पर मां टूटी टीन की सुराख से आती रोशनी को ध्यान से देखने लगी। बेटी के उदास चेहरे में उसे अपना गरीब बचपन अनायास दिखने लगा। ऐसे वह भी परेशान होती थी। सोचते हुए उसने अपनी मां की बातें याद कीं।

"अरे सुतिया! तू काहे को रोबत है? अच्छा सुन तो इस गीत को गा। "गेंदा-गुलाब ले लो चम्पा-चमेली हो, फूलों की झुकी डाल, मैं हूं अलबेली हो।"

मां ने गीत को लड़की को अच्छे से रटा करसुला दिया।

दूसरे दिन मां से सीखी बातें और गीत की पंक्ति गा-गाकर सुतिया ने खूब फूल बेचे। सड़क पर चलते लोगों को उसका गीत बड़ा अच्छा लगा। सो कुछ गीत सुनने के लिए तो कुछ फूल खरीदने के लिए रुक जाते।

"ए लड़की! एक 'स्टिक' कितने पैसे में..?" इलाके में नए आए डी. एम. मेहरा साहब ने सुतिया से फूलों के दाम पूछे। भारी-भरकम आवाज जब लड़की ने सुनी, तो इधर-उधर देखने लगी।

"इधर मेरी ओर!" उन्होंने कहा।

जैसे ही उसने ऊपर की ओर नजरें उठाई। सामने चौड़ा माथा, लंबी कद-काठी, गौर-वर्ण, और हाथ में सागौन का रूल, जिसके हत्थे पर लेदर की टोपी और एक छल्ला लगा था। उसे कलाई में फंसाए मेहरा साहब रौब में खड़े थे।

जो सुतिया तितली की तरह फूल बेच रही थी, वह अब संकोच में पड़ गई। उसे मालूम था कि यह साहब प्रतिदिन टहलने आते हैं लेकिन वह उनकी ख्याति से अनभिज्ञ थी।

"इसका मतलब तू गूंगी है।"

"नहीं।" चेहरा झुकाते हुए सुतिया ने कहा, तो छोटी-सी खुशी उसके

होठों पर खिल उठी। उसे लगने लगा कि उसके फूल आज अनंत से पहले बिक जाएंगे।

"कितने पैसे की माला है?"

"बाबूजी! माला पैसे की नहीं, रुपयों की है। यदि पैसे वाली माला चाहिए, तो आगे जाओ।" कहते हुए सुतिया मुंह छिपाकर हंस पड़ी।

"तुम अपनी बात करो उसे छोड़ो।"

"ठीक है। कौन से फूल लेना है? मेरे पास गेंदा, देहेलिया, चांदनी और गुलाब हैं। जैसे अलग-अलग फूल वैसे ही अलग-अलग दाम। आपको कौन से दे दूं?" सुतिया ने चार-पांच गुलाब की डंडी ऊपर तान दीं।

"ये अच्छे हैं। मुझे दस गुलाब गुलाब की डंडी और कुछ गेंदे दे दो!"

"अच्छा बाबूजी!"

"अच्छा सुनो, तू फूल कब से बेचती है?"

"जब से मां बीमार है।"

"ग्राहकों से मोल-भाव करना कहां से सीखा?"

"मां से।"

"वह पढ़ी-लिखी हैं?"

"ना, बचपन में वो भी फूल बेचती थी!"

"पैसे का हिसाब तू कैसे करती है?"

"मुझे गणित आता है। आपको कितने गुलाब चाहिए?"

"रुको, पहले ये बताओ जब तुम्हें हिसाब लगाना आता है, तो स्कूल क्यों नहीं जाती?"

उनके सवाल पर सुतिया की खनकती आवाज मौन हो गई। टाट के नीचे से एक पुरानी-सी किताब निकालकर उसने दिखाई और कहने लगी, "बाबूजी, मैं भी स्कूल जाती थी। जब से लॉकडाउन लगा है, तब से स्कूल जाना बंद हो गया है।"

"क्यों? स्कूल तो खुले हैं। सभी बच्चे ऑनलाइन पढ़ते हैं।"

"हां, आपने सही कहा। पर मेरे

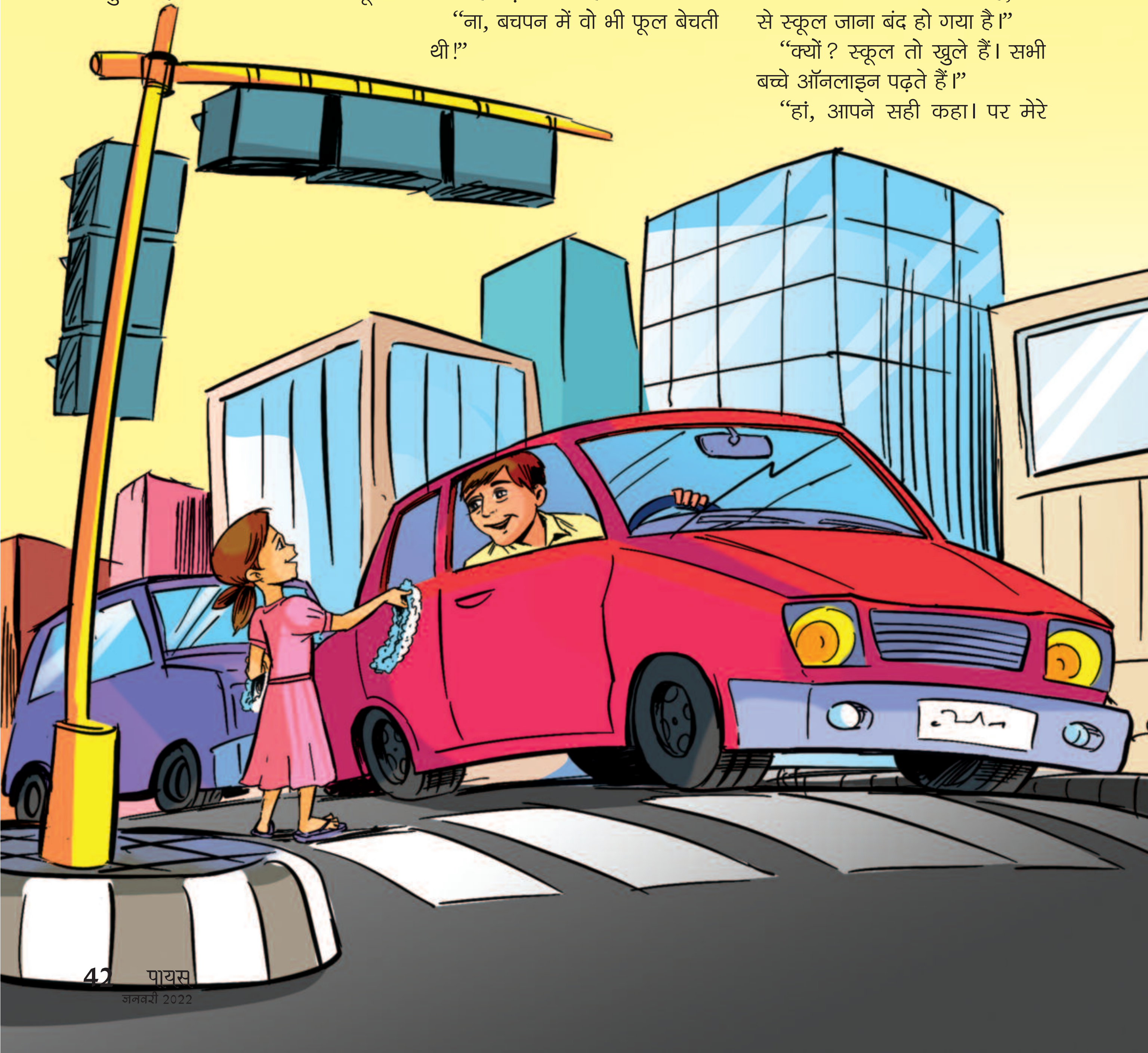

बाबा के पास पैसे नहीं हैं, बहुत बार मैंने उनसे फोटू वाला फोन दिलाने के लिए कहा लेकिन बापू कुछ बोलते ही नहीं।" कहते हुए सुतिया चुप हो गई।

"तुम सच में पढ़ना चाहती हो?"

"हां!" कहते हुए सुतिया का कंठ रुंध चला था। वह आगे कुछ भी नहीं बोल पाई। अबोध का दुख देखकर मेहरा साहब भी भावुक हो गए। उन्होंने सांत्वना में कुछ कहना चाहा तब तक सुतिया फिर बोल पड़ी, "मैं सब कर लूंगी। फूल भी बेच लूंगी और किताब भी पढ़ लूंगी। मेरे पास फोन तो होना चाहिए!" बिना झिझके वह अपनी बात कह गई।

"तुम्हारे माता-पिता क्या करते हैं?"

"बाबा घर बनाते थे और माई चौका-बर्तन। जब से लॉकडाउन लगा, उन दोनों के पास कोई काम नहीं है। इसलिए उनके पास पैसे नहीं और मेरे पास स्कूल नहीं।"

"ये तो मुश्किल हुई?"

"हां, लेकिन चिंता की बात नहीं। जिस दिन सारे फूल बिक जाते हैं, उस दिन अपनी सहेली से पूछकर किताब पढ़ लेती हूं। लेकिन मुझे भी ऑनलाइन क्लास पढ़ना है। जब मेरे पास ज्यादा रुपए हो जाएंगे, तब मैं अपना फोन खरीदूंगी।" सुतिया अपनी भावनाओं में मचल उठी थी।

"फूल बेचकर इतने पैसे हो जाएंगे?" मुसकराते हुए मेहरा साहब ने पूछा।

"जी बाबूजी!"

लड़की की पढ़ाई के प्रति लगन और आत्मविश्वास देखकर उनका मन भीग गया और हृदय में उदारता हिलोरें लेने लगी। कुछ देर वह शून्य में ताकने लगे , फिर बोले, "तेरे माता-पिता कहां रहते हैं? यहां बुला सकती हो?" मेहरा साहब बोले।

"बाबूजी, मैं अपनी दुकान छोड़कर नहीं जा सकती।"

"तू चिंता मत कर! तेरी दुकान पर मैं हूं न।"

मेहरा साहब का आश्वासन पाकर सुतिया सड़क की दूसरी पट्टी पर बनी झुग्गियों में घुस गई।

"बाबूजी, ये हैं मां।" थोड़ी देर में सुतिया अपनी मां के साथ उनके सामने खड़ी हो गई।

"क्या हुआ साहब? बच्ची से कोई गलती हो गई?" सुतिया की मां ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"नहीं-नहीं! बिल्कुल नहीं। मुझे फूल खरीदना था। इसे हिसाब...।"

"बाबू साहब! यह सब समझती है। बस इसकी किस्मत हेठी है!"

सुतिया ने सूनी आंखों से मां को देखा और सारे फूल बड़ी सी थैली में उड़ेल दिए।

"ये लो! इसके लिए माता-पिता को बुलाने की क्या जरूरत?" सुतिया अपने ज्ञान पर कौतुक से मुसकरा पड़ी।

"पैसे बोल?"

"बाबूजी, मैंने आपको गुलाब की दस डंडी दी हैं। एक डंडी की कीमत सौ रुपये है, तो एक हजार हुए।"

"बहुत दाम बताती है। क्या इतने मंहगे होते हैं फूल?"

"मोबाइल तो बहुत मंहगे होते हैं बाबूजी!" भौहें उचकाते हुए सुतिया बोली।

"अच्छा ठीक है, रुको।" मेहरा साहब ने दूर खड़ी अपनी कार को इशारा किया तो धीमी रफ्तार से कार उनके पास आकर रुक गई। उन्होंने कार से बटुआ निकाला और लाल-लाल कई नोटों को लपेटकर लड़की की ओर बढ़ा दिए। लड़की हैरानी से उनके हाथ देख रही थी।

"नहीं, मेरे इतने पैसे नहीं होते। फूलों के हिसाब से पैसे दो।"

मेहरा साहब को सुतिया के व्यक्तित्व ने खासा प्रभावित किया था। उन्होंने उसे समझा-बुझाकर रुपए पकड़ा दिए। उसने जब रुपए पकड़े तो उसका मन ख़ुशी से भर गया। वह रुपयों के बंडल को देखती, कभी कार, तो कभी देव दूत बन आए मेहरा साहब को। फिर अचानक सुतिया रुपए लौटाते हुए बोली, "मुझे लगता है आप बहुत नाराज हैं? अच्छा, जितने पैसे देने हो, दे दो। पर इन्हें ले लो।" लड़की ने पैसे उनकी ओर बढ़ा दिए।

"फूल वाली लड़की! ये रुपए गुस्से में नहीं अपितु तेरे साहस, ईमानदारी और हिम्मत के लिए तुझे इनाम दिया है। अब जाओ, इन पैसों से अपने लिए एक फोन खरीदना और खूब मन लगाकर पढ़ाई करना। और हां, ये ले मेरा कार्ड। कल अपने बापू को इसी पते पर भेज देना।"

मेहरा साहब मुसकराते हुए चले गए। सुतिया मां से लिपट गई और आश्चर्य मिश्रित ख़ुशी लिए वह लंबी-सी सफेद कार के ओझल होने तक हाथ हिलाती रही। ❀

अपने रचनाकार को जानिए

कल्पना मनोरमा : कानपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में परास्नातक एवं बी.एड. इग्नू से एम.ए (हिंदी भाषा), सम्प्रति : अध्यापन व स्वतंत्र लेखन, रुचियां : ऐसा साहित्य पढ़ना, जिसका समय के साथ गाढ़ा रचाव हो। प्रकाशित कृतियां : प्रथम नवगीत संग्रह, 'कब तक सूरजमुखी बनें हम', दो काव्य संग्रह एवं एक कथा संग्रह प्रकाशनाधीन।

गौरवशाली कुम्भलगढ़

जिसे घूमने का शौक हो, उसके लिए तो राजस्थान स्वर्ग है। जयपुर, चित्तोड़गढ़, उदयपुर, कुम्भलगढ़, जोधपुर, जैसलमेर..., आप थक जाएंगे पर नाम खत्म नहीं होंगे।

राजस्थान किलों का राज्य है। आपको किले भी एक से नहीं, विभिन्न रंग रूप के मिलेंगे। इनमें से चित्तोड़गढ़ और कुम्भलगढ़ के किलों की बात ही कुछ और हैं। तो मेरे साथ चलिए, इस बार कुम्भल गढ़ की सैर पर

उदयपुर पर उतरकर हम होटल में गए। टैक्सी का पता किया, तो उसने बताया, उदयपुर से करीब 85 किलोमीटर दूर है कुम्भलगढ़ और इस टूर में हम साथ में हल्दीघाटी भी देख सकते हैं।

तो हम निकल पड़े कुम्भलगढ़ के लिए। पथरीली सड़कों और गांवो से होते हुए हम कुम्भलगढ़ करीब दो घंटे में पहुंच गए। पहुंचने से पहले रास्तों का घुमाव आपको पहाड़ों की याद दिला देती है।

कुम्भलगढ़ राजस्थान के राजसमन्द जिले में स्थित एक दुर्ग है। इस किले का निर्माण महाराणा कुम्भा ने सन 13 मई 1459 को करवाया था। अपने समय का यह सबसे भव्य किला था। कुम्भलगढ़ किले को मेवाड की आंख भी कहते हैं। यह दुर्ग कई घाटियों व पहाड़ियों को मिलाकर बनाया गया था जिससे यह प्राकृतिक रूप से भी सुरक्षित रहा। इस किले को अपने समय में अजयगढ़ भी कहा जाता था क्योंकि इस किले पर विजय प्राप्त करना बहुत कठिन था। केवल एक बार इस किले पर आक्रमणकारी विजय पताका फहरा सका और वह भी गिनती के दिनों के लिए।

निर्माण कार्य पूर्ण होने पर अपने बनाए किले पर मुग्ध महाराणा कुम्भा ने सिक्के ढलवाए, जिन पर दुर्ग और उसका नाम अंकित था।

यह किला यूनेस्को की सूची में सम्मिलित है। इस दुर्ग में ऊंचे स्थानों पर महल, मंदिर व आवासीय इमारतें बनाई गईं और समतल भूमि का उपयोग कृषि कार्य के लिए किया गया। वहीं ढलान वाले भागों का उपयोग जलाशयों के लिए किया गया। संकट काल में महीनों तक दुर्गवासी खान-पान की चिंता किए बिना रह सकते थे।

किले में घुसने के लिए आरेठपोल, हल्लापोल, हनुमानपोल तथा विजयपाल आदि दरवाजे हैं। अंदर प्रवेश करते ही दायीं तरफ मंदिर और बाईं तरफ महल दिखाई देते हैं। हम पहले इसकी दीवार पर चढ़े।

इस किले के चारों ओर बनी बड़ी दीवार चीन की दीवार के बाद विश्व कि दूसरी सबसे बड़ी दीवार है। इसकी दीवारें लगभग 36 किमी लंबी है और इससे अंदाजा लगाया

जा सकता है कि किला कितना बड़ा होगा। इस दीवार की खास बात है इसकी चौड़ाई। इस की चौड़ाई इतनी अधिक है कि एक साथ चार घुड़सवार पूरे किले का चक्कर लगा सकते हैं। सैनिक बाहर के खतरों पर आसानी से नजर रख सकते थे। वैसे भी इस किले की बनावट अर्धकुम्भ जैसी है, इस कारण आक्रमणकारी बार से सीढ़ी लगाकर भी दुर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता था।

इस दुर्ग में बने मंदिर की वास्तुकला और स्थापत्य कला दर्शनीय है। किले के पास जैसे ही हम मैदान में उतरे, दायीं तरफ भगवान शिव को समर्पित नीलकंठ महादेव मंदिर है। इस मंदिर का आज भी स्थानीय लोगों द्वारा पूजा और रखरखाव किया जाता है। कहा जाता है कि राणा कुम्भा ने इस देवता की पूजा किए बिना एक दिन की शुरुआत नहीं की। इस मंदिर के साथ चांमुडाली देवी का मंदिर प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक सुरक्षित और भव्य है। इस किले में अति सुंदर जैन मंदिर भी हैं।

मंदिरों के दर्शन करने के बाद हम किले के शीर्ष भाग की ओर बढ़े घुमावदार रास्ता है, ऊपर जाने के लिए। इस गढ़ के शीर्ष भाग में बादल महल है व कुम्भा महल सबसे ऊपर है। कुम्भलगढ़ के किले के भीतर एक लघु दुर्ग 'कटारगढ़' स्थित है, जिसमें 'झाली रानी का मालिया' महल प्रमुख है। बादल महल किले के सबसे ऊपरी भाग में बना है। इसका बादल और गोरा लड़ाकों से कोई संबंध नहीं है। इसे यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि यह इतनी ऊंचाई पर है कि बादल साथ-साथ बिल्कुल पास दिखाई देते हैं, इसलिए इसका नाम बादल महल पड़ गया। चट्टान के शीर्ष पर स्थित बादल महल दो मंजिली इमारत है, जो दो अलग-अलग हिस्सों में विभाजित है। इन्हें 'जनाना' और 'मर्दाना' महल कहा जाता है। जनाना महल को पत्थर की जाली से सजाया गया है जिससे रानियों को अदालत की कार्यवाही और अन्य घटनाओं को देखने का मौका मिले।

किले के अंदर राणा लाखा द्वारा निर्मित लखोला टैंक सबसे उल्लेखनीय टैंक है। यह किले के पश्चिमी हिस्से में स्थित है। 1947 में स्वतंत्रता के समय टैंक की गहराई 12 मीटर थी और तब से इसे बढ़ाकर 18 मीटर कर दिया गया है। ❁

महाराणा प्रताप का जन्म

कुम्भलगढ़ में वह महल भी दर्शनीय है जहां महाराणा प्रताप का जन्म हुआ। पतली सीढ़ियों से ऊपर जाकर पहली मंजिल पर वह पावन स्थान है, जहां महाराणा प्रताप का जन्म हुआ था। पर वहां जाने की पर्यटकों को इजाजत नहीं है।''

दुर्ग और महाराणा

कुम्भलगढ़ एक तरह से मेवाड़ की संकटकालीन राजधानी रहा है। महाराणा कुम्भा से लेकर महाराणा राज सिंह के समय तक मेवाड़ पर हुए आक्रमणों के समय राजपरिवार इसी दुर्ग में रहा। यहीं पर कुंवर पृथ्वीराज और राणा सांगा का बचपन बीता था। महाराणा उदय सिंह को भी पन्ना धाय ने इसी दुर्ग में छिपाकर पालन पोषण किया था। यह दुर्ग महाराणा प्रताप की जन्म स्थली भी है। हलदी घाटी के युद्ध के बाद महाराणा प्रताप भी काफी समय तक इसी दुर्ग में रहे।

दादाजी का चश्मा

स्कूल जाने से पहले रजत दादाजी के कमरे में उनके पांव छूने आया तो देखा, वह वॉशरुम में हैं।

तभी उसकी नजर टेबिल पर रखे उनके चश्मे पर पड़ी। उसने झट से चश्मा उठाकर पहन लिया और स्वयं को शीशे में निहारने लगा।

'अरे वाह, मैं तो बिल्कुल छोटा दादाजी लग रहा हूं। सब लोग सच ही कहते हैं। उसकी शक्ल बिल्कुल दादाजी पर गई है।' रजत इस बात से खुश हो ही रहा था कि उसे वॉशरुम से कुछ आहट आई। शायद दादाजी आने वाले थे। रजत ने जल्दी से चश्मा उतारकर टेबल पर रखना चाहा, किंतु हड़बड़ाहट में चश्मा जमीन पर गिर गया। रजत तेजी से वहां से चला गया। बैग हाथ में लिए वह दरवाजे की ओर बढ़ा ही था कि मम्मी ने पूछा, "रजत, दादाजी के पांव छू लिए न ?"

"मम्मी, वह शायद नहा रहे हैं।" कहकर वह तेजी से स्कूल के लिए निकल गया।

स्कूल में उसे बार-बार चश्मा टूटने की बात याद आती रही। कितनी बार दादाजी ने उसे कहा था कि उनके चश्मे को हाथ न लगाया करे, किंतु वह मानता कहां है? जैसे ही दादाजी की नजर बचती है, वह चश्मा छूने लगता है। आखिरकार आज चश्मा टूट ही गया न। इससे पहले उसने पापा का कितना बड़ा नुकसान कर दिया था।

उस दिन पापा अपने स्टडी रुम में बैठे लैपटॉप पर काम कर रहे थे और वह वहां आकर बॉल से लगा था। तब कितनी बार पापा ने कहा था कि रुम से बाहर जाकर खेले किंतु उसने उनकी बात अनसुनी कर दी।

और फिर अचानक ही बॉल उसके हाथ से छूटकर लैपटॉप के स्क्रीन पर जा लगी थी। स्क्रीन टूट जाने से पापा आगबबूला होकर उसे मारने को उठे थे। बहुत बार उसने पापा से सॉरी बोला था। तब कहीं जाकर उन्होंने उसे माफ किया था।

और आज फिर उसने नुकसान कर दिया। मन ही मन उसने निर्णय लिया, अब वह हमेशा बड़ों की बात मानेगा किंतु चश्मा टूटने की बात किसी को नहीं बताएगा।

दोपहर में रजत घर लौटा। रोज की तरह मम्मी और दादाजी डाइनिंग टेबिल पर उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। हाथ मुंह धोकर वह खाना खाने बैठा। इस समय वह स्कूल की बातें बताता था, किंतु आज वह कुछ नहीं बोल रहा था। मन ही मन उसे घबराहट हो रही थी। उसे इतना चुपचाप देख दादाजी बोले, "क्या बात है रजत? आज स्कूल की बातें नहीं बताओगे?"

"आज कोई खास बात नहीं हुई दादाजी।" वह बोला और मन ही मन सोचने लगा, 'लगता है, दादाजी को पता नहीं चला कि चश्मा उससे टूटा है। तभी तो वह उससे नाराज नहीं दिख रहे।' इस बात से उसे कुछ राहत मिली।

रजत शाम को खेलकूद कर घर वापस लौटा, तो उसने सुना, पापा दादाजी से कह रहे थे, "पिताजी, अभी पिछले महीने ही आपके लिए नया चश्मा बनवाया था और आज टूट भी गया और आप बता भी नहीं रहे कि चश्मा टूटा कैसे?"

रजत ने दादाजी को सिर झुकाए पापा की बातें सुनते देखा, तो उसका मन खराब हो गया। वह मम्मी के पास किचन में आया। उसने पूछा, "मम्मी, दादाजी घर में सबसे बड़े हैं। पापा उनसे नाराज क्यों हैं?"

"पापा नाराज नहीं हैं बेटा। वह बस जानना चाहते हैं, चश्मा कैसे टूटा।"

"अब टूट गया तो टूट गया। इसमें पूछने वाली कौन सी बात है? आप दादाजी के लिए नया चश्मा बनवा दीजिए।"

"यह बात तुम पापा से बोलो। मुझे काम करने दो।" मम्मी ने कहा।

"नहीं, मैं पापा से कुछ नहीं बोलूंगा। वह मुझे डांटेंगे।" रजत अपने कमरे में जाकर पढ़ने बैठ गया किंतु आज उसका पढ़ाई में मन नहीं लग रहा था। वह उठा, हिम्मत करके उसने पापा के कमरे में झांका। पापा भी अपने काम में व्यस्त थे। जैसे ही वह वापिस जाने के लिए मुड़ा, पापा की आवाज आई, "क्या बात है रजत? कुछ कहना चाहते हो?"

"पापा! प्लीज, दादाजी का चश्मा बनवा दीजिए न।" रजत पापा की मनुहार करते हुए बोला।

"मैं भी जल्द से जल्द पिताजी का चश्मा बनवाना चाहता हूं किंतु उन्हें बताना तो चाहिए कि चश्मा कैसे टूटा। भूलवश नुकसान होना गलत नहीं है किंतु उसके बारे में किसी को न बताना..." पापा ने बात अधूरी छोड़ दी और उसका चेहरा देखने लगे।

रजत उदास मन से अपने कमरे में आ गया। रह-रहकर उसे दादाजी का ख्याल आ रहा था। कितना प्यार करते हैं वह उससे। उसे पढ़ाते तो हैं ही, साथ ही उसके साथ खेलते भी हैं। अपने दोस्तों की हर बात वह दादा जी को बताता है और कोई समस्या आ जाए, तो चुटकियों में उसका हल भी बता देते हैं। पिछले दिनों उसकी आरव के साथ लड़ाई हो गई थी, तब दादा जी ने ही तो फिर से दोस्ती करवाई थी। यही नहीं, दो माह पहले जब उसे वायरल बुखार हो गया था, तो दादा जी कितने दुखी थे। हर वक्त उसके पास

बैठे रहते थे। कभी उसका सिर सहलाते, कभी अपने हाथ से फल खिलाते। किंतु अब वह क्या कर रहा है उनके साथ? मन में कुछ निश्चय कर रजत सो गया।

अगली सुबह वह सोकर उठा और सीधे दादाजी के कमरे में पहुंचा। वह मम्मी पापा के साथ चाय पी रहे थे। रजत बोला, "पापा, मैं आप तीनों से सॉरी बोलना चाहता हूं। दादाजी का चश्मा मुझसे टूटा था।"

"कल से तुमने यह बात क्यों छिपाई? पापा ने पूछा।

"मुझे डर लग रहा था कि आप मुझे मारेंगे।"

"अब डर नहीं लगा?" मम्मी ने पूछा तो रजत बोला, "मम्मी, दादाजी मुझे बहुत प्यार करते हैं। मेरी वजह से उन्हें बिना चश्मे के रहना पड़ रहा है। पापा पिटाई भी करेंगे तो कोई बात नहीं। कम से कम दादाजी का चश्मा तो बन जाएगा।"

दादाजी और मम्मी-पापा के चेहरे पर मुसकान तैर गई।

पापा बोले, "दादाजी का चश्मा मैंने कल ही बनवा दिया था। हम तीनों तुम्हारे सामने नाटक कर रहे थे। जानते थे कि चश्मा तुमसे टूटा है किंतु चाहते थे कि तुम स्वयं अपनी गलती स्वीकार करो। अपनी भूल स्वीकार करने से इंसान का आत्मबल बढ़ता है।"

"मुझे माफ कर दीजिए दादाजी।" कहते हुए रजत की आंखों से आंसू बहने लगे।

दादाजी ने प्यार से उसे गले लगा लिया। ❀

अपने रचनाकार को जानिए

रेनू मंडल : पिछले 42 वर्षों से लेखन कार्य में निरंतर सक्रिय। अब तक लगभग 800 कहानियां प्रकाशित जिनमें बड़ों के साथ साथ बच्चों की भी अनेकों कहानियां देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। एक कहानी संग्रह भी आ चुका है

छोटा सा अविष्कारक : लुइस ब्रेल

"अतुल, देख तो बेटा, दरवाजे पर कौन है ?"

"मम्मी पोस्ट मैन है, आप की कोई रजिस्टर्ड पोस्ट आई है। बड़ी और मोटी है, किताब लग रही है ।"

"मेरे हाथ बेसन के हो रहे है खोल कर देख तो, कौन सी किताब है ? "

"अरे मम्मी, इस पर तो कुछ भी नहीं लिखा, हर पेज पर बस बहुत सारे डॉट डॉट ही हैं। देखो तो, यह क्या है ?"

"अभी हाथ धोकर आती हूं।"

"लो मां, इसे आपकी रसोई में ही ले आया ।"

"अरे यह तो ब्रेल लिपि की पत्रिका है।"

"यह कैसी पत्रिका है, मम्मी इस पर तो कुछ लिखा ही नहीं है ? इसे कोई कैसे पढ़ सकता है ?"

"बेटा यह पत्रिका नेत्रहीनों के लिए है।"

"क्या मजाक करती हैं मम्मी, जिसे हम आंखों वाले नहीं पढ़ पा रहे उसे ब्लाइड कैसे पढेंगे ?"

"इसे ब्रेल लिपि कहते हैं। इसे आंखों से नहीं उंगलियों से टच करके पढ़ा जाता है।"

"आपके पास क्यों आई है ? "

"इसमें मेरी कहानी होगी।"

"आप पढ़ सकती हैं इसे ? बताएं आप की कहानी कहां है ? "

"नहीं बेटा मैं इसे नहीं पढ़ सकती क्यों कि मुझे यह ब्रेल नहीं आती। इसे भी दूसरी भाषाओं की तरह लिखना, पढ़ना सीखना पड़ता है।"

"हर नेत्रहीन इसे पढ़ सकता है क्या ?"

"नहीं, जिसने इसे सीखा है, बस वही पढ़ सकता है। नेत्रहीनों के अलग स्कूल होते हैं। वहां उन्हें इसे पढ़ना सिखाया जाता है। वे सब इसी लिपि में पढ़-लिखकर ऊंची शिक्षा हासिल करते हैं।"

"इन्हें नौकरी मिल जाती है ?"

"बहुत से आफिसों, स्कूल, कालेजों में वे काम करते हैं। उनके लिए आरक्षण होता है।"

"अरे वाह, यह मुझे नहीं पता था। मम्मी किसने बनाई होगी यह लिपि ? इसके विषय में कुछ बताइए न।"

"मुझे भी बहुत ज्यादा तो नहीं पता पर इतना पता है कि जिन्होंने इस का आविष्कार किया, उनका नाम लुईस

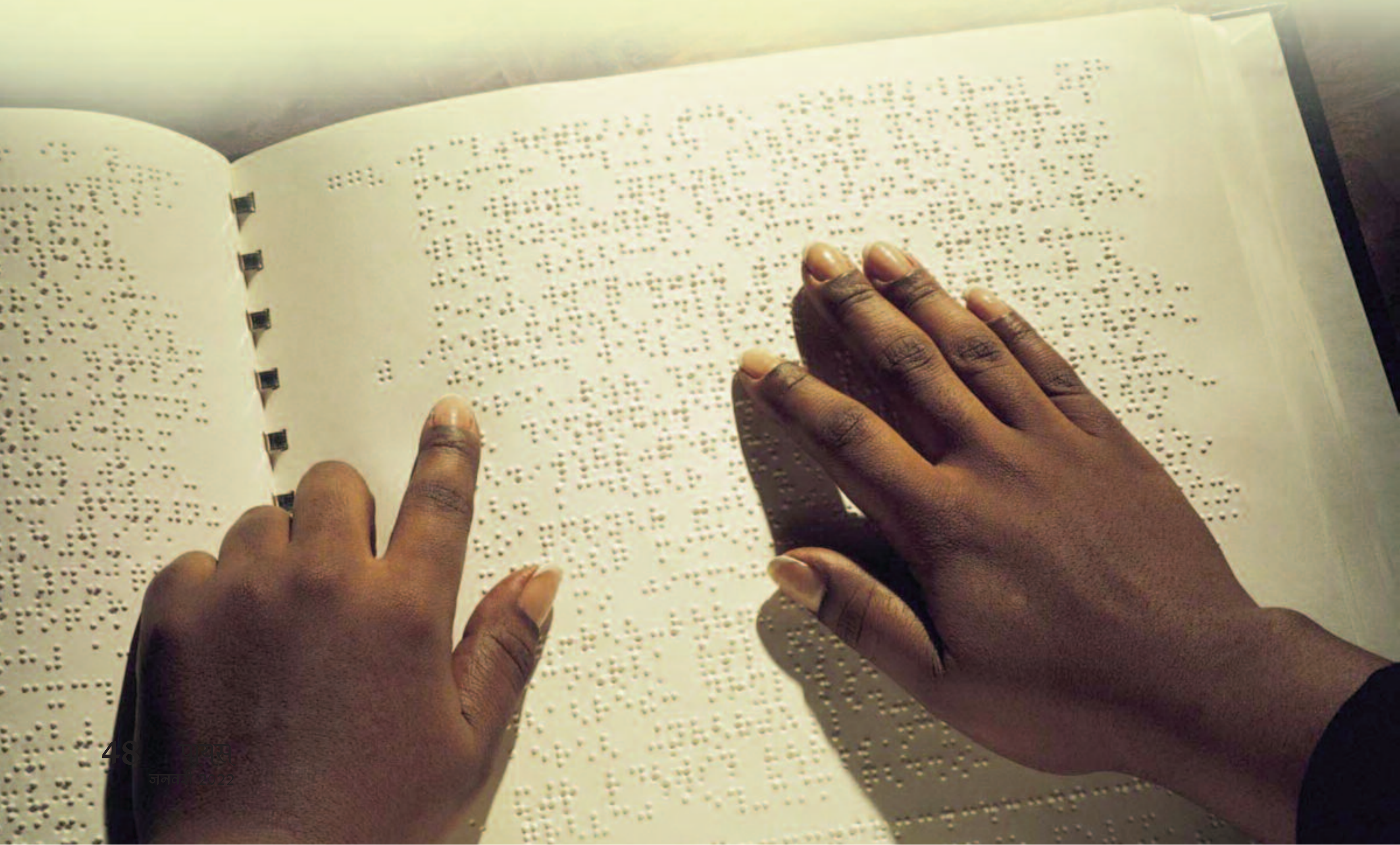

ब्रेल था।"

"मम्मी, उन्हें इस लिपि को बनाने का विचार कैसे आया होगा ?"

"बेटा कहते हैं न आवश्यकता अविष्कार की जननी है।"

"तो क्या वह भी नेत्रहीन थे ?"

"वह जन्म से तो नेत्रहीन नहीं थे, पर तीन वर्ष की उम्र में पापा के कारखाने में खेलते हुए कोई धारदार औजार उनकी आंख में लग जाने की वजह से उनकी आंख में घाव हो गया था, फिर उनकी दूसरी आंख में भी इन्फेक्शन हो गया, इस तरह दोनों आंखों की रोशनी चली गई थी।"

जब वह दस साल के थे, तब पेरिस में नेत्रहीनो के लिए विश्व का पहला स्कूल खुला था, तब उनका दाखिला उस स्कूल में करा दिया गया था। एक बार इस स्कूल में फ्रांस की सेना के रिटायर्ड अधिकारी प्रशिक्षण देने के लिए आए। उन्होंने सेनिकों के लिए अंधेरे में पढ़ी जा सकने वाली 'नाईट राइटिंग' कोड के बारे में बताया था। इसे कागज पर अक्षरों को उभारकर लिखा जाता था, जिसे टटोलकर पढ़ा जा सकता था इसमें बारह बिंदुओं की सहायता ली जाती थी।"

"मम्मी, इसका मतलब यह पहले से थी। पर अभी तो आपने कहा था कि इसका अविष्कार लुईस ब्रेल ने किया था।"

"हां थी, पर वह आधी-अधूरी और बहुत मुश्किल भी थी। इसके बारे में सुनकर लुइस ब्रेल को महसूस हुआ कि इसे नेत्रहीनों के लिए विकसित किया जा सकता है। वह उस रिटायर्ड अधिकारी से मिला। बाद में बालक लुईस ब्रेल ने केवल छह बिंदुओं का इस्तेमाल करके एक बहतर लिपि तैयार की। इस में फुलस्टॉप, कॉमा,

गणित के बहुत से चिन्ह आदि भी जोड़े गए। 15 वर्ष की उम्र में ब्रेल ने इस लिपि का अविष्कार किया था। पर उनके जीवन काल में इसे पूरी तरह मान्यता नहीं मिली थी। बहुत बाद में जाकर इसकी महत्ता लोगों की समझ में आई। तब जाकर यह पूरे विश्व में नेत्रहीनों के लिए उपयोग साबित हुई और आज भी हो रही है।"

"हां, देखो मां मैंने इंटर नेटपर ढूंढ़ लिया। उनका जन्म फ्रांस में 4 जनवरी 1809 में हुआ था और मृत्यु भी जनवरी में ही 6 जनवरी 1852 में हुई थी।"

"हां बेटा, अब तो नेत्रहीनों के लिए दुनिया भर में बहुत से स्कूल हैं। अपने देश में भी हैं और अपने शहर हैदराबाद में भी है। वहां ब्रेल लिपि में बच्चों को कम्प्यूटर की भी शिक्षा दी जाती है। और मालूम है बेटा, रामायण, महाभारत तक ब्रेल में उपलब्ध है। हर भाषा की बहुत पुस्तकें हैं और जरुरत के हिसाब से भारतीय भाषाओं की हर सब्जेक्ट की पुस्तकों को ब्रेल लिपि में बदला जा सकता है।

भारत में उनके ऊपर डाक टिकट भी निकला था। उनका जन्मदिवस 4 जनवरी 'विश्व ब्रेल दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

अपने शहर में भी नेत्रहीनों के लिए स्कूल है। वहां ब्रेल में बच्चों को कम्पूटर की शिक्षा दी जाती है। एक दिन तुमको वहां लेकर चलूंगी। ❀

अपने रचनाकार को जानिए

पवित्रा अग्रवाल : करीब 40 वर्षों से स्वतंत्र लेखन। मुख्य विधा कहानियां, लघुकथाएं, बाल कहानियां। देश की प्रमुख पत्रिकाओं, बाल पत्रिकओं में लगातार प्रकाशन। भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा पुरस्कृत।

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो- email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है, रेनू मंडल जी ने

नाम : करिश्मा
आयु : 10 वर्ष
कक्षा :5, स्कूल : प्राथमिक विद्यालय धुसाह 1, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

नाम : प्रग्यांश पुरोहित
आयु : 12 वर्ष
कक्षा :8, स्कूल : पुष्पा हायर सेकेंडरी स्कूल, टीकमगढ़, मध्यप्रदेश

तृतीय पुरस्कार

करिश्मा

द्वितीय पुरस्कार

नाम : रितिका वेदुला
आयु : 10 वर्ष,
कक्षा : पांचवीं
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल,
झारसुगुड़ा, ओड़िशा

रितिका वेदुला

प्रथम पुरस्कार

मेरा सपना

नाम : काजल धारीवाल
उम्र : 12, कक्षा : 9,
स्कूल : शा. पद्मा कन्या राजे उच्च मा. विद्यालय,
ग्वालियर, मध्य प्रदेश

न तारों की ख्वाहिश, न चाँद की तमन्ना
दिल में है, अपने एक छोटा सा सपना
कुछ खास नहीं, बस जिंदगी का मकसद पाना है
जहाँ सलामी ठोके ये दुनिया, कुछ ऐसा अपना मिजाज बनाना है
कि पंछी की तरह उड़ जाऊ मैं
लोगो से कुछ अलग कर दिखाऊ मैं
आसान जिंदगी तो सब जीते हैं
मरकर भी इतिहास बनके रह जाऊ मैं
दुनिया में अपनी एक नई पहचान बनाऊ मैं
सूरत से नहीं, अपनी काबिलियत से जानी जाऊं मैं
मेरी मेहनत रंग लाए जरूर,
एक दिन आसमा छू जाऊं मैं

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ–साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

- संरक्षक बनकर
- मासिक अनुदान देकर
- यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर
- विज्ञापन देकर
- हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर
- किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**